Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.com

मनुष्य जन्म को दुर्लभ कहा गया है। जिन्हें यह प्राप्त है, वे मनुष्य जन्म का मूल्यांकन करना सीखें।
- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली ● वर्ष 25 ● अंक 34 ● 27 मई - 02 जून , 2024 | प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 25-05-2024 ● पेज 20 | ₹ 10 रुपये

हे प्रभो ! यह तेरापंथ

वैशाख शुक्ला दशमी का दिन है सर्वज्ञता प्राप्ति का दिन : आचार्यश्री महाश्रमण

11वें आचार्य के 15वें पदाभिषेक दिवस पर पहुंचें गुजरात के राज्यपाल देवव्रत आचार्य

जालना।
18 मई, 2024

वैशाख शुक्ला दशमी, परम प्रभु भगवान महावीर का केवलज्ञान कल्याणक दिवस एवं आचार्यश्री महाश्रमणजी का 15वां पट्टोत्सव दिवस। आज से लगभग 14 वर्ष पूर्व आज ही के दिन सरदारशहर में आचार्यश्री महाश्रमणजी विधिवत आचार्य पद पर विराजमान हुए थे, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के अनन्तर पट्टधर बने थे। आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आज छः दिवसीय दीक्षा कल्याणक महोत्सव के संदर्भ में आयोजित समारोह के अन्तर्गत दूसरा दिन वैशाख शुक्ला दशमी का दिन है। आज का दिन परम वन्दनीय भगवान महावीर से जुड़ा दिन है। भगवान महावीर ने संन्यास का जीवन लगभग 30 वर्ष की अवस्था में स्वीकार किया था। लगभग साढ़े बारह वर्षों तक भगवान महावीर ने विशेष साधना की, तप तपा और आज के दिन उनकी साधना फलीभूत हुई थी। आज के दिन उन्होंने चार घाति कर्मों के क्षय के द्वारा केवल ज्ञान प्राप्त किया था। आज का दिन ज्ञान प्राप्ति का दिन है, वीतरागता प्राप्ति, शक्ति सम्पन्न होने, सर्वज्ञता प्राप्त करने का दिन है।

महावीर तीर्थंकर बने, उन्होंने देशना दी और एक परम्परा जैन शासन के रूप में आगे बढ़ी। जैन समाज में अध्यात्म की साधना का महत्व है। जैन शासन में चार तीर्थ हैं- साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविका। जैन शासन में साधु बनने की दो परम्पराएं हैं- दिगंबर और श्वेतांबर परम्परा। श्वेतांबर परम्परा में दो धाराएं हैं- मूर्तिपूजक और अमूर्तिपूजक परम्परा। अमूर्तिपूजक परंपरा में भी स्थानकवासी और तेरापंथी परम्पराएं हैं।

हमारा संप्रदाय श्वेतांबर परम्परा में तेरापंथी है। लगभग 264 वर्ष का इस सम्प्रदाय का इतिहास है। इसके आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु स्वामी थे। उनसे संबंधित परंपरा आगे बढ़ी। संघ को चलाने के लिए नियम, सिद्धान्त और संचालक आवश्यक है। हमारे धर्मसंघ की मर्यादाएं-व्यवस्थाएं हैं। लोकतंत्र हो या राजतंत्र अनुशासन दोनों पद्धतियों में आवश्यक है। हमारा सम्प्रदाय एक धार्मिक-आध्यात्मिक संगठन है। इसमें एक आचार्य की परम्परा है और वर्तमान आचार्य ही भावी आचार्य का निर्णय करते हैं। (शेष पेज 18 पर)

मानवता के कल्याण के लिए समर्पित हैं आचार्यश्री महाश्रमण

गुजरात के महामहिम राज्यपाल देवव्रत आचार्य ने कहा कि मुझे यह जानकर सुखद अनुभव हुआ कि आपने बहुत ही छोटी आयु में जीवन के परम तत्व को समझते हुए इस भौतिक संसार से विरक्ति का रास्ता चुना और मानवता के कल्याण के लिए, विश्व की भलाई के लिए अपना पूरा जीवन ही समर्पित कर दिया। इन छः दिनों में आपका जन्म दिन, पदारोहण दिन और संन्यास के पचास वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। भारत देश की संस्कृति सबसे पुरातन संस्कृति है। काल-गणना के संदर्भ में भारत जैसा दूसरा देश नहीं है। जो गतिशील है, वो संसार है। जिस समाज का नैतिक मूल्य, चरित्र, सोच सबके कल्याण की होगी, उस समाज को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। आचार्यश्री महाश्रमणजी और इनके साधु-साध्वी इसी मिशन पर घर को त्याग कर लगे हुए हैं। उनका यही मिशन है कि यह सृष्टि और सुखमय हो, सबमें भाईचारा, एकता, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की भावना का विकास हो।

आज के दिन तेरापंथ के इतिहास में जुड़ा नया अध्याय

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रभो! आज आपके पट्टोत्सव-दायित्व ग्रहण का दिन है। सभी आचार्यों ने कुशलता से अपने दायित्व का निर्वाह किया था। नेतृत्व की शैली सबकी अपनी-अपनी होती है। आज के दिन तेरापंथ के इतिहास में ग्यारहवां अध्याय जुड़ा था। आचार्य तब निर्भार बनते हैं, जब वे अपने दायित्व को सौंप देते हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने गंगाशहर में अपना दायित्व सौंपते हुए आपको युवाचार्य पद पर स्थापित किया था। आज हम सभी आपके कर्तृत्व, नेतृत्व का अभिनन्दन कर रहे हैं।

63वें जन्मदिवस पर वीतराग कल्प गुरुदेव ने दी अजन्मा बनने की प्रेरणा

आदर्श के अनुरूप करें गति प्रगति : आचार्यश्री महाश्रमण

जालना।
17 मई, 2024

वैशाख शुक्ला नवमी, तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी का 63वां जन्म दिवस। आज से 62 वर्ष पूर्व सरदारशहर के दुगड़ परिवार में मां नेमांजी की कुक्षि से बालक मोहन का जन्म हुआ था। आज वह बालक हमारे धर्मसंघ के सिरमौर ग्यारहवें आचार्य के रूप में हम सबके आराध्य बने हुए हैं।

आर्षवाणी की अमृत देशना प्रदान कराते हुए जनोद्धारक आचार्य श्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि दुनिया में व्यक्ति का जन्म होता है। मानने वाला एक दिवस को अपना जन्म दिवस मान लेता है, परन्तु अनन्त जन्म दिवस हर आत्मा के हो गये होंगे। अतीत के प्रायः याद नहीं रहते होंगे। पूर्व जन्म प्रायः विस्मृत हो जाते हैं। जीव जब नई योनि में जन्म लेता है, तो पूर्व जन्म पर आवरण सा आ जाता है।

अनन्त जन्मों में जब मानव जीवन के रूप में जन्म होता है, वह बड़ा महत्वपूर्ण होता है। एक दृष्टि से देव जन्म से भी मनुष्य जन्म उत्तम होता है। क्योंकि जो साधना, उत्कृष्ट आराधना मानव जन्म में की जा सकती है, वह

अन्य जन्मों में नहीं की जा सकती। मोक्ष की प्राप्ति भी इस मानव जीवन से ही होती है। मानव जन्म मिलने के बाद इसका उपयोग हम क्या करते हैं, यह खास बात है। जो व्यक्ति अध्यात्म की साधना, संयम-चरित्र की आराधना करता है, सम्यग-ज्ञान, सम्यग-दर्शन की उपलब्धि कर लेता है, तो मानव जीवन सार्थक सफल हो जाता है। अध्यात्म की साधना मिलना विशेष बात हो जाती है।

निमित्तों का भी अपना महत्व हो सकता है। मेरी संसारपक्षीया मां नेमा बाई थी, उन्होंने एक महत्वपूर्ण कार्य कर दिया कि मुझे साधु-संतों के सम्पर्क से जोड़ दिया। साधु-साध्वियों से एक प्रेरणा मिली कि एक महान पथ पर चलने का मानो संकल्प जाग गया। (शेष पेज 18 पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
27 मई - 02 जून, 2024

आत्म निग्रह है दुःख मुक्ति का मार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

गोकुलवाड़ी।
14 मई, 2024

अध्यात्म योगी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगमवाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि आदमी दुःख से मुक्त रहना चाहता है। शान्ति रहे, सुख रहे, यह सुखप्रियता आदमी में होती है। दुःखों से मुक्त होने की भावना हो सकती है। जो हम प्राप्त करना चाहते हैं उसे प्राप्त करने का तरीका क्या है? किसी मंजिल पर पहुंचना है तो उसका रास्ता क्या है? रास्ता मिल जायेगा, उस पर चलेंगे तो संभव है, हमें मंजिल भी मिल जायेगी।

आदमी का लक्ष्य - साध्य बढ़िया बना लिया तो एक कार्य तो हो गया। साधन हमें मिल जाये, मार्ग हमें मिल जाये, उस पर चलना शुरू कर दें तो एक दिन लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। सर्व दुःख मुक्ति हमारा साध्य है या साध्य होना चाहिए। इसका साधन है- हे पुरुष! अपने आप का ही निग्रह करो, अपना ही संयम करो। आत्मानुशासन बढ़िया चीज है।

पाप दुःख है, पाप का हेतु है - आश्रव। आश्रव से कर्म का बंध होता है और वे कर्म फिर हमें दुःख देने लगते हैं। मोक्ष सर्व दुःख मुक्त अवस्था है।

मोक्ष का उपाय है- संवर और निर्जरा। अपने आप का निग्रह करने से संवर हो जायेगा और तपस्या से निर्जरा भी हो सकेगी। मन, वचन, शरीर और इंद्रियों पर संयम हो और त्याग की चेतना जाग जाये। यह आत्म निग्रह की साधना हो जाती है।

आगमों में हमें तत्व ज्ञान व धर्म साधना की बातें मिलती हैं। नवकार मंत्र जैन शासन का एक महत्वपूर्ण तत्व है। इसके प्रति हम सबकी आस्था है। पंच परमेष्ठी को हम श्रद्धा से नमन करें। पंच परमेष्ठी 108 गुणों के धारक होते हैं।

एक बार नमस्कार महामंत्र का स्मरण संसार सागर से तारने वाला बन सकता है। जैन शासन में अनेक सम्प्रदाय हैं, सब अपनी साधना करते रहें। आपस में मैत्री-सद्भावना रखने का व धार्मिक सहयोग करने का प्रयास करें, सौहार्द का भाव रहे। पूज्यवर के स्वागत में वर्धमान स्थानकवासी संघ की ओर से सुभाष मुथा ने अपने विचार व्यक्त किए। जयमल संघ की समणी जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। सुभाष नाहर, जालना महिला मंडल ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

त्रिविध धर्म साधना से भरते जाएं आत्मा का कलश : आचार्यश्री महाश्रमण

जालना।
16 मई, 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी आज प्रातः अपनी धवल सेना के साथ सप्त दिवसीय प्रवास हेतु जालना में पधारे। जालना में पूज्यवर का 63वां जन्मोत्सव, 15वां पट्टोत्सव एवं पचासवें दीक्षा कल्याणक महोत्सव के समापन का कार्यक्रम आयोजित होना है।

जालना प्रवास के प्रथम दिन महामनीषी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म के तीन प्रकार होते हैं- अहिंसा, संयम और तप। अहिंसा धर्म है, संयम रखना धर्म है, और तप तपना भी धर्म है। साधु के संदर्भ में आगम में बताया गया है कि वर्ष को हम तीन भागों में बांट दे- सर्दी, गर्मी और वर्षा। साधु गर्मी की ऋतु में आतापना लेते हैं, आतापना तपस्या है। गर्मी में साधु यात्रा करता है तो पूरा शरीर तप्त हो जाता है, यह भी एक तरह की आतापना हो सकती है।

सर्दी में साधु ठंड को सहन करे, इसको भी तपस्या कहा जाता है। वर्षा में शरीर का संयम रखे, गुप्त रखे। एक जगह चातुर्मास में रहे, स्वाध्याय, ध्यान, जप और तप करे। बाह्य व आभ्यंतर दो प्रकार के तप होते हैं। तपस्या से निर्जरा अर्थात् आत्म शोधन होता है। साथ में संयम-संवर की साधना हो सकती है।

जीवन में मन, वचन, काय से अहिंसा की साधना करना भी धर्म है। साधु के लिए तो ये सब जरूरी है। जो आगार धर्म का पालन करने वाले हैं, गृहस्थ हैं, वे भी धर्म की साधना करें। हमें मानव जीवन प्राप्त है, इसका बढ़िया उपयोग करना चाहिए। जैन-अजैन सभी इसकी साधना कर सकते हैं। अणुव्रत से जीवन को संयम युक्त बनाया जा सकता है। कहीं पर रहो, मांसाहार का प्रयोग न हो। होटल, हॉस्टल या हॉस्पिटल में, देश में हो या विदेश में, धर्म के निर्देश के अंतर्गत रहना चाहिए।

अनंतकाय-जमीकंद के प्रयोग व रात्रि भोजन से भी बचने का प्रयास होना चाहिए। गृहस्थ जीवन में भी अनेक रूपों में तपस्या की जा सकती है। कुछ उम्र आने के बाद समय साधना में लगे। चौदह नियम का पालन कर टिफिन तैयार कर लेवें। सपाथेय यात्री अटवी को सुरक्षित पार करने वाला होता है, साथ में कुछ भी नहीं है, अपाथेय है, तो मार्ग में मुश्किल हो सकती है। आगे के लिए धर्म का पाथेय तैयार कर लें। हमारी आत्मा का कलश धर्म की बूंदों से भरता जाए। अहिंसा, संयम, तप के द्वारा इस कलश को भरने का प्रयास करें। बारह व्रत, सुमंगल साधना को स्वीकार करें, व्यापार में ईमानदारी, व्यवहार में सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति का प्रयास करें।

धर्म बड़ी सम्पति है, धन इस जीवन के बाद काम नहीं आता, धर्म आगे भी काम आ सकता है। भगवान महावीर तो कितने बड़े संपत्तिशाली थे। वैशाख शुक्ला दशमी के दिन लगभग एक ही साथ चार संपत्तियां उन्हें प्राप्त हो गयी थी - केवलज्ञान, केवलदर्शन, वीतरागता और अन्तराय रहितता। हम भी उस सम्पदा को प्राप्त करने का प्रयास करें। शास्त्र शासन और त्राण देने वाले होते हैं। हम शास्त्र का प्रयोग करें और शस्त्रों के प्रयोग से बचने का प्रयास करें। अहिंसा, संयम और तप इस त्रिविधधर्म की साधना करने का प्रयास करें ताकि आत्मा संपत्तिशाली बन सके। आत्मा का कल्याण हो सके।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति में गुरू का सर्वोपरि स्थान है। गुरू हमारे मार्गदर्शक, पथप्रदर्शक होते हैं। गुरु के निर्देश से हम आध्यात्मिक सम्पदा को प्राप्त कर सकते हैं। गुरू वह होता है जो अकिंचन होता है। लोग आपका अभिनंदन करते हैं क्योंकि आपके पास अध्यात्म की संपदा है। मुनि चिन्मय कुमार जी ने श्रीचरणों में अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्थानीय सभा अध्यक्ष सुनील सेठिया, तेयुप से परेश धोका एवं सदस्यगण, कन्यामंडल, सकल जैन समाज ने पूज्य प्रवर के स्वागत में अपनी प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई। गुरु गणेश तपोधाम के अध्यक्ष धर्मचंद गादिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

देश के नैतिक उत्थान के लिए हुआ अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात

दुर्गापुर ।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या समणी मधुरप्रज्ञा जी के दर्शन हेतु केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुन मेघवाल आए एवं दर्शन कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

समणी मधुरप्रज्ञा जी ने अपने प्रवचन में आचार्यश्री तुलसी के अवदानों की चर्चा की। उन्होंने कहा- आचार्य तुलसी ने देश के नैतिक उत्थान के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। तनाव बहुल युग में मानव मन की शांति एवं आनन्दमय जीवन के लिए प्रेक्षाध्यान दिया। संतुलित शिक्षा पद्धति के लिए जीवन विज्ञान का क्रम प्रारम्भ किया। उनकी प्रेरणा से तेरापंथ धर्म संघ साहित्य से समृद्ध बना। आचार्यश्री महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमणजी का साहित्य जीवन को नई दिशा प्रदान करता है। समणी जी ने आगे कहा कि केंद्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल ने अणुव्रत को केवल समझा ही नहीं अपितु जीवन में उतारने का प्रयत्न किया है। वर्तमान में आप जैन विश्व भारती संस्थान के कुलाधिपति के रूप में संस्थान का गौरव बढ़ा रहे हैं।

केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुन मेघवाल ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा- जब मैं स्कूल का विद्यार्थी था, उस समय आचार्य तुलसी गंगाशहर, भीनासर आए। तब मैं उनसे परिचित ही नहीं हुआ, प्रभावित भी हुआ। उनका जन-संपर्क का तरीका बड़ा ही विस्मयकारी था। बात-बात में गहन बात समझा देते थे। आजादी के समय की स्थिति को देखकर उन्होंने असली आजादी के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ किया। मुझे राजनीति में आने और काम की प्रेरणा आचार्य महाप्रज्ञ से मिली। आचार्य महाश्रमण जी के सान्निध्य में भी अनेक बार जाने का अवसर मिलता है। जैन विश्व भारती संस्थान का कुलाधिपति होने के कारण लाडनूं जाने का अवसर भी मिलता रहता है। समणी मननप्रज्ञा जी ने कहा- आप और हम एक ही स्थान से संबंध रखते हैं। आज आपका आना आह्लाद का विषय है। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मनोज मणोत ने स्वागत वक्तव्य दिया। बच्चों द्वारा आचार्य तुलसी के सोलह अवदानों की प्रस्तुति की गई, महिला मंडल ने सुस्वर में गीत प्रस्तुत किया। उमराव बाई बोरड़ ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्य तुलसी ने देश के नैतिक उत्थान के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया।

कर्ममल साफ हुए बिना आत्मा में चमक नहीं आती

शास्त्री नगर, दिल्ली।

तेरापंथ भवन शास्त्री नगर में 'शासनश्री' साध्वी ललितप्रभाजी ठाणा-3 के सान्निध्य में आयोजित वर्षीतप अभिनन्दन समारोह में तपस्विनी बहन कंचनदेवी गोलछा का अभिनन्दन किया गया। साध्वीश्री ने कहा- धर्म का मार्ग है अहिंसा, संयम और तप। तप ही कर्ममल धोने का साधन है। जिस प्रकार अग्नि में तपे बिना सोने में चमक नहीं आती, ठीक वैसे ही कर्ममल साफ हुए बिना आत्मा में चमक नहीं आती। हम तप के तेज से जीवन को निखारें।

साध्वी अमितश्रीजी ने कहा- मनोबली व्यक्ति ही तप में आगे बढ़ सकता है। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के महामंत्रोच्चारण द्वारा हुआ। प्रवीण गोलछा ने तपस्विनी कंचनदेवी गोलछा का परिचय एवं स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। दिल्ली सभा संरक्षक मिलाप बोथरा, सभा अध्यक्ष संजय सुराणा, साधुमार्गी संघ के कविन्द्र छाजेड़, मध्य दिल्ली महिला मंडल अध्यक्षा दीपिका छल्लाणी, तेयुप शास्त्री नगर के सह संयोजक अमित बेंगानी, लीला गोलच्छा एवं उर्मिला संचेती ने तप अनुमोदन में अपने विचार प्रस्तुत किए। महिला मंडल, भिक्षु भजन मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका, गोलछा परिवार, काशीद राजेश द्वारा तप अभिनन्दन गीतों की प्रस्तुति दी गयी। आभार ज्ञापन राजा कोठारी एवं कार्यक्रम का संचालन साध्वी कर्तव्ययशाजी ने किया।

वर्षीतप अभिनन्दन समारोह

चेम्बूर, मुम्बई।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के पावन सान्निध्य में वर्षीतप तपस्वियों का अनुमोदन कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने फरमाया कि तपस्या कर्म निर्जरा और आत्म शुद्धि के लिए की जाती है। तपस्वी अपने जीवन में क्षमा, सहिष्णुता के साथ सामायिक, प्रतिक्रमण का भी प्रयोग करता रहे जिससे उसकी उज्ज्वलता, निर्मलता बढ़ती रहे। कार्यक्रम में मंगलाचरण नैना कोठारी एवं डिम्पल मेड़तवाल ने किया। मनीषा कोठारी ने आगन्तुकों का भावभरा स्वागत किया। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष जुगराज बोहरा, मंत्री टिंकू बाफणा, युवक परिषद् मंत्री अरूण धाकड़ ने तपस्वियों का भावभरा स्वागत किया।

कार्यक्रम में कोठारी, चंडालिया, बड़ोला एवं रांका परिवार के सदस्यों ने स्वर लहरियों के माध्यम से कार्यक्रम को और मनमोहक बना दिया। सभी तपस्वियों का समाज की ओर से सम्मान किया गया।

टीटीएफ फिजिकल मिशन एम्पावरमेंट वर्कशॉप का आयोजन

साउथ हावड़ा।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स के अंतर्गत फिजिकल मिशन एम्पावरमेंट वर्कशॉप का आयोजन किया गया।

कार्यशाला के अंतर्गत युवाओं और किशोरों को आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया, उन्हें प्राकृतिक आपदाओं एवं आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने हेतु सक्षमता और दक्षता प्राप्त करना सिखाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुयी। परिषद् अध्यक्ष गगनदीप बैद ने उपस्थित सभी का स्वागत अभिनंदन करते हुए निवर्तमान अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा के साथ बादामी देवी आश्रम के पदाधिकारी का सम्मान किया। उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी ने अभातेयुप ट्रेनर जय चौरड़िया का सम्मान किया। मंत्री अमित बेगवानी ने उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ग्रीन ब्रिगेड सदस्य अनन्त चौरड़िया ने किया।

मंगल भावना कार्यक्रम

बीरगंज।

बीरगंज तेरापंथ भवन के प्रांगण में समणी निर्देशिका डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी व समणी डॉ. मानसप्रज्ञा जी के प्रति मंगल भावना का कार्यक्रम सामूहिक रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ समणी निर्देशिका जी ने नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा बीरगंज के अध्यक्ष निर्मलकुमार सिंघी, नेपाल स्तरीय उपाध्यक्ष अशोककुमार बैद, महिला मंडल अध्यक्ष बबीता खटेड़, तेयुप अध्यक्ष धीरज बोरड, निवर्तमान अध्यक्ष मिंटू बोथरा, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका प्रीति बैद, आंचलिक संयोजिका तारा राखेचा, ईशा संचेती आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी ने मंगल भावना का अर्थ मल प्रक्षालन बताते हुए सभी की मंगल भावनाओं को स्वीकारा तथा सबको 15 मिनट अपने परिवार के साथ धार्मिक क्रिया करने का, धर्म के प्रति अपनी जागरूकता बनाये रखने व बहनों को उपासिका बनने की प्रेरणा दी। समणी डॉ. मानसप्रज्ञा जी ने मैनपॉवर के सुंदर उदाहरण देकर लोगों के मन में धर्म के प्रति अपनी आस्था व श्रद्धा द्वारा कार्यक्रमों में अच्छी उपस्थिति रखने की प्रेरणा दी। संचालन मंत्री कुसुम मणोत ने किया गया।

एक ही दिन में दो स्थानों में लगा चार तीर्थ का ठाठ

अंधेरी, मुंबई।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ठाणा 4 अंधेरी, मुंबई से विहार कर तेरापंथ भवन, गोरेगांव पधारे। वहां प्रवचन कर मलाड़ भवन पधारे जहां विराजित डॉ. साध्वी पीयूषप्रभा जी से मुनिश्री का वर्षों बाद आध्यात्मिक मिलन हुआ।

वहां मुनिश्री सुबह और दोपहर दो समय का प्रवचन कर कांदीवली भवन पधारे जहां विराजित 'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी द्वितीय ने आपका भावभरा स्वागत किया।

दोनों साध्वियों ने कहा कि आपका लम्बा विहार करना पूर्ण सार्थक हो गया। गुरु दर्शन, संघ मिलन के साथ सहोदरी 'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी को आपकी सेवा, दर्शन के साथ अंत में चौविहार का प्रत्याख्यान करवा कर आपने बहुत बड़ा काम किया। साध्वी सोमलताजी वक्ता, लेखिका, गायिका के साथ एक आचारवान और व्यवहार कुशल साध्वी थी।

मुनि अमन कुमारजी ने दीक्षा की प्रेरणा प्रदात्री साध्वीश्री से मिलकर स्वरचित गीत का संगान कर सबको मंत्र मुग्धकर दिया।

'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी ने मुनि अमनकुमार जी के गीत को सुनकर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मुनि कमलकुमारजी के सुश्रम की प्रशंसा की।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

अंक ज्योतिष में आचार्य महाश्रमण

● साध्वी सिद्धयशा ●

अंक ज्योतिष में अंकों का विशेष स्थान होता है। इस विद्या में खासतौर से गणित के कुछ नियमों का प्रयोग कर जीवन के विभिन्न पहलुओं का आकलन किया जाता है। आचार्य महाश्रमण जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। अंक शास्त्र के अनुसार आपके प्रभावशाली जीवन में अंकों के असर की छोटी सी झलक प्रस्तुत की जा रही है।

1. 4- अंक 4 स्थिरता दर्शाता है।आचार्यश्री महाश्रमण जी स्थिरयोगी हैं, घंटों-घंटों बिना सहारे एक ही मुद्रा में विराजते हैं। आपश्री का हर कार्य धैर्य युक्त होता है, चाहे कोई व्यवस्था करनी हो, निर्णय देना हो या किसी को सुनना हो।

2. 99-अंक 9 प्रसिद्धि का सूचक है। आपश्री ने लम्बी-लम्बी पदयात्रा कर तेरापंथ धर्म संघ की ख्याति को और ऊंचा किया है। जब से आप पाट विराजे हैं न जाने कितने-कितने कीर्तिमान आपने स्थापित किए हैं। आचार्यश्री भिक्षु से लेकर वर्तमान तक का इतिहास देखा जाए तो अब तक की अपूर्व घटना है कि आचार्यश्री ने 47 किमी का प्रलम्ब विहार कर शासनमाता को दर्शन दिए। एक ओर शासनमाता वंदना कर रही थी तो दूसरी और आचार्य प्रवर भूमि पर विराज कर वन्दना कर रहे थे। यात्रा के दौरान आचार्य प्रवर का अनेकों नेता-अभिनेताओं, धर्मगुरुओं, विशिष्ट विभूतियों से मिलना हुआ जैसे महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, दलाई लामा, मोहनराव भागवत, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उद्धव ठाकरे आदि। जिस भी राज्य में आपका पदार्पण होता है वहां की सरकार आपको राजकीय अतिथि के सम्मान से सम्मानित करती है। आपकी प्रसिद्धि, यश, कीर्ति दिन-दुनी रात-चौगुनी बढ़ती जाए।

3. 22-अंक 2 संवेदनशीलता व भावुकता का प्रतीक है। आपश्री की संवेदनशीलता तो विश्व प्रसिद्ध है। आपश्री के चरणों में आने वाला अपना दुःख भूल जाता है। आपका दर्शन व्यक्ति में नई उमंग, नया उत्साह, नई प्रेरणा भर देता है। साधु-साध्वियां ही नहीं, श्रावक-श्राविकाओं का भी आप पूर्ण ध्यान रखते हैं। मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक कोई भी रोगी हो आप अपने अमृत वचनों, मंगलपाठ व मंत्र से निरोगता का वर देते हैं। आप यदि किसी के बारे कोई घटना सुनते हैं तो इतने भावुक हो जाते हैं, मानो उनकी पीड़ा आपकी पीड़ा हो।

4. 3 जिसके 3 अंक होता है उसका भाग्य खिला रहता है। उस पर गुरु की कृपा अच्छी होती है। आप पर दो-दो गुरुओं की असीम कृपा रही है। आपको 10 आचार्यों की सम्पदा प्राप्त है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने आपको पाकर निश्चिंतता का अनुभव किया, अपने आसन पर आपको बिठाया। आचार्यश्री तुलसी ने आपको खूब आगे बढ़ाया और आपके जीवन को धर्म संघ के लिए आदर्श रूप प्रदान किया। आचार्यश्री तुलसी के शब्दों में- 'साधु हो तो महाश्रमण जैसा'।

5. जिस व्यक्ति के 5 अंक होता है उसके व्यक्तित्व का एक गुण केयरिंग स्वभाव होता है। हम सब यह अनुभव करते है कि आप छोटे से छोटे या बड़े से बड़े संत हो या सतियां सबका ध्यान रखते हैं। सबको ध्यान से सुनते हैं, हर बात पर ध्यान दिलाते हैं। कोई पास हो या दूर आपके लिए सब समान हैं। आप इतने बड़े धर्म संघ का सकुशल सञ्चालन करते हैं जो सबको समाधि प्रदान करता है।

6. 11 वार्तालाप। जिस के 11 अंक आता है वह व्यक्ति दूसरों से संवाद करता है। हम देख रहे हैं आप स्वयं पांव-पांव चलकर जनोद्धार के लिए देश-विदेश पधारे। जिस व्यक्ति के मन में दूसरों को तारने की भावना होती है, वही यह महाश्रम का पथ चुनता है।

आज के इस डिजिटल युग में क्या संभव नहीं है, आप एक स्थान में रहकर भी प्रवचन करवा सकते हैं, उपदेश दे सकते हैं। परन्तु आप ने स्वयं दूसरों से साक्षात् संवाद स्थापित करने का लक्ष्य बनाया। आप फरमाते हैं कि जो जुड़ाव साक्षात् मिलन से होता है वह दूर के संवाद से नहीं हो सकता।

7. 6 सही राय देना, लक्ज़री। 6 अंक वाला व्यक्ति लक्ज़री लाइफ जीता है। तेरापंथ का आचार्य बिना पुण्य नहीं बना जा सकता है। आपने एक बार फरमाया था कि और आचार्यों को देखे तो उनके साथ कम संत होते हैं, कभी उन्हें अपना बोझ भी स्वयं लेना होता है, गोचरी भी जाना पड़ सकता है, पर तेरापंथ के आचार्यों की ओर देखें तो संत आस-पास सेवा में हरदम उपस्थित रहते हैं। बोझ भी संत ले लेते हैं, सहारा देते हैं, चरण पखारते हैं, पानी पिलाते हैं।

8. 4 99 22 - यह लाइन बुद्धि को दर्शाती है। आपकी बुद्धि बेजोड़ है। हर प्रश्नकर्ता की समस्या का समाधान आपके पास है। हर संशय का निराकरण आप बड़े सुंदर तरीके से करते हैं। कोई बात किसी को समझानी हो तो आपके पास नए-नए दृष्टांत तैयार रहते हैं। हर प्रश्न का उत्तर आप इस तरह दिराते हैं जिससे बात सामने वाले के गले उतर जाए। आपके दृष्टांतो को सुनकर ऐसा अनुभव होता है मानो आचार्यश्री भिक्षु व जयाचार्य स्वयं अवतरित हुए हैं।

9. 9 5 11 संकल्प शक्तिः यह लाइन व्यक्ति के विल पॉवर को दर्शाती है। आचार्यश्री महाश्रमण को कोई रोक नहीं सकता, कोई जीत नहीं सकता, आपने अंहिसा यात्रा करवाई, देश-विदेश पधारे।

यदि उदाहरण खोजें तो स्मृति पटल पर काठमांडू का वह भूकम्प उभर आता है। जहां मकान धराशायी हो रहे थे, पत्थर लुढ़क रहे थे, सारी जनता भयभीत हो रही थी। आपको भारत लौटने को कहा जा रहा था परन्तु आप अविचल रहे।

10. गोल्डन लाइन - यह बॉक्स भरने से हर कार्य अपने आप हो जाता है। एक सिद्धांत है- चिंतन, निर्णय, क्रियान्विति। आचार्यश्री महाश्रमण के जीवन में यह सिद्धांत पूरी तरह लागू होता है। आचार्यश्री महाश्रमण जो सोचते हैं, उसका निर्णय करते हैं और क्रियान्विति का रूप देकर जनता को लाभान्वित करते हैं।

11. 3 5 - यह लाइन ह्रदय की सूचक है। गीत में कहा गया 'तेरा दिल करुणा का दरिया सबके मन को भा गया'। आप अहिंसा के पुजारी हैं। अहिंसक वही हो सकता है जो करुणावान हो। आप परम पापभीरू हैं। आप एक चींटी के प्रति भी पूर्ण जागरुक रहते हैं। यदि कहीं चींटी, कीड़े-मकोड़े होते है तो दूसरों को भी सचेत कर देते हैं कि कही हिंसा का दोष न लग जाय।

12. 1 1 6 यह लाइन श्रम की सूचक है। सन 2001 में श्रीडूंगरगढ़ में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के लिए कहा - 'आचार्यश्री भिक्षु ने आचार्यश्री भारमल जी से कहा- भारमल। तुम भाग्यशाली हो, तुम्हें हेमड़ा मिल गया। संभवतः आज आचार्य भिक्षु मुझे भी कह रहे होंगे- महाप्रज्ञ। तुम भी भाग्यशाली हो, तुम्हें भी महाश्रमण के रूप में हेमड़ा मिल गया।' आपके कर्तृत्व की यशोगाथा सर्वत्र दिखाई देती है। आपका जीवन हर पल हर क्षण श्रम की प्रेरणा देता है।

प्रदीप्त पौरूष के पुंज- आचार्य महाश्रमण

● साध्वी कनकरेखा ●

युग के कैनवास पर नए-नए सपने संजोकर संकल्पों के जरिए उन्हें सच करने वाली विरल-विभूति है- आचार्य महाश्रमण। विश्वसंत के रूप में जिनका नाम बड़े ही आदर एवं गौरव के साथ लिया जाता है। प्रदीप्त पौरूष के पुंज, जब उन्मेषों के अनूठे सृजनहार, विलक्षण प्रतिभा के धनी, अनगिन विलक्षणताओं के दस्तावेज युगप्रभावक आचार्य महाश्रमण के पारदर्शी व्यक्तित्व का स्वर्णिम जीवन इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

इस वसुंधरा पर ऐसे व्यक्ति बहुत कम पैदा होते हैं जो मानवता के लिए पूजनीय होते हैं, अभिवंदनीय होते हैं, जिनके आगे लाखों सिर श्रद्धा से झुक जाते हैं। संत, महंत, प्रणम्य विवेकानंद ने महिमामंडित व्यक्तित्व की अभिवंदना करते हुए कहा-

'पवित्र चरितं यस्या, पवित्र जीवनं तथा
पवित्रता स्वरूपिण्यै तस्मै कुर्मो नमो नमः'

हम पवित्रता के प्रति सहज श्रद्धाप्रणत हैं। हम देखते हैं- तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्य महाश्रमणजी को, जिनका संपूर्ण जीवन पवित्रता का अक्षयकोष है। परम तत्त्व को पाने हेतु उनके आत्मसदन में सदैव पवित्रता का परचम लहरा रहा है। महामनस्वी आचार्य महाश्रमणजी का जीवन-दर्शन सहजता, सौम्यता, सरलता, समता का गुण-समवाय है। आपकी उपासना में चाहे धर्मनेता आएं या राजनेता सत्यान्वेषी दृष्टिकोण से सबका पथ सहज प्रशस्त हो जाता है।

महावीर, बुद्धि, ईसा, भिक्षु, तुलसी, महाप्रज्ञ के साथ महाश्रमण का नाम भी महामानव के रूप में प्रतिष्ठित है।

महानता के पेरामीटर की चर्चा करते हुए बताया गया है - जिसका चिंतन महान् है, जिसका लक्ष्य महान है, जिसका भविष्य महान है, जिनकी लाइफ स्टाइल का ग्राफ आम जनता से हटकर ऊंचा होता है। सही प्रबंधन, सही सोच, मधुर संभाषण, विनयशीलता, विवेकशीलता, श्रमशीलता, श्रद्धाशीलता, कर्तव्यशीलता,कार्यशीलता जैसे महान् गुण महानता के पद को सुशोभित करते हैं।

महावर्चस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी का व्यक्तित्व इन महान गुणों की सौरभ से सुरभित होकर पूरे जहान में संतता की अलग पहचान बनाई है। आपका लाइफ मेनेजमेंट सबके लिए आदर्श है।

कहा जाता है- पर्वत में ऊंचाई होती है, गहराई नहीं, सागर में गहराई होती है, ऊंचाई नहीं। आचार्य प्रवर में इन दोनों का सुंदर मणिकांचन योग है। आपकी चारित्रिक ऊंचाई पर्वत से भी कई गुना अधिक ऊंची है, तो दूसरी ओर ज्ञान की गहराई सागर से भी विशेष गहरी है।

"Most powerful is he who has himself in his power."

यह कहावत तेरापंथ के भाग्य विधाता, पूज्य प्रवर के जीवन में चरितार्थ होती है। सप्तवर्षीय अविस्मरणीय अहिंसा यात्रा के दौरान हर इंसान की एक आवाज 'दीन-दुखियों की पीर हरने आया है कोई रहनुमा'।

सचमुच में मुश्किलें हर जिंदगी में आती है, जो करूणा के सागर बन, क्षमा के पारावर बन, शांति के अवतार बन, आसानी से हर परिस्थिति को झेल लेते हैं, वे श्रमण से महाश्रमण बन जाते है।

पुरुषार्थ के शिखर पुरूष हैं- आचार्य महाश्रमण ।
समत्व की पराकाष्ठा हैं- आचार्य महाश्रमण ।
पथिक को प्रतिबोध देने वाले हैं- आचार्य महाश्रमण
भीष्म पितामह वत् दृढ़ प्रतिज्ञाधारी हैं- आचार्य महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

व्यक्तित्व की रेखाओं में आचार्य महाश्रमण

● मुनि भव्य कुमार ●

शब्द परिमित हैं, व्यक्तित्व की रेखाएं अपरिमित। परिमित से अपरिमित को बांधने का प्रयास गागर में सागर भरने जैसा है। परन्तु जब यथार्थता अभिव्यक्ति पाने के लिए ललचाती है तब व्यक्ति ऐसा असंभाव्य प्रयास भी कर बैठता है। आचार्य महाश्रमण का व्यक्तित्व कुछेक रेखाओं से निर्मित है पर वे रेखाएं अत्यंत स्फुट हैं। समस्त रेखाएं यथार्थता की परिक्रमा किये चलती हैं। अतः उन्हें श्लाघा के रंग से रंगने की आवश्यकता नहीं रहती।

वास्तव में वे जो हैं वे हैं, इससे अतिरिक्त और कुछ नहीं। उनके व्यक्तित्व का लेखा-जोखा अनुभूति में है शब्दों में नहीं। अनुभूति चेतन है और शब्द जड़ फिर भी दृश्य लोक शब्दों के सहारे ही समझता है। अतः हम चेतन को जड़ माध्यम से अभिव्यक्त करने का दुःसाहस करते है। आचार्य महाश्रमण का व्यक्तित्व चित्रण भी कुछ ऐसा ही लघु प्रयास है।

आचार्य महाश्रमण का बाह्य और आन्तरिक दोनों ही प्रकार का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक है। गौर वर्ण, मझला कद, प्रशस्त व भव्य ललाट, तीखी और उठी हुई नासिका, गहराई तक झांकते तेजोदिप्त नयन, अद्भुत कान, गीर्वाणग्रीवा, भरा हुआ मनमोहक मुखमण्डल और भव्य संस्थान- यह है आपका प्रथम दर्शन से ही आकृष्ट करने वाला दृश्य व्यक्तित्व।

आचार्य महाश्रमण का आन्तरिक व्यक्तित्व इससे भी कहीं बढ़कर है। एक धर्म सम्प्रदाय के आचार्य होते हुए भी सभी सम्प्रदायों की विशेषताओं का आदर करते हैं और सहिष्णुता के आधार पर उन सब में नैकट्य स्थापित करते हैं। आप मानव में नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति के संस्कारों को जगाकर भूमण्डल पर मानवता की प्रतिष्ठा में अहर्निश लगे हैं। अथक परिश्रम आपके मानस को अपार तृप्ति प्रदान करता है। प्रसन्न मन, सहज ऋजुता, सबके प्रति समभाव, आत्मीयता की तीव्र अनुभूति, विशाल चिन्तन, विरोधी के प्रति अनुद्विग्नता, आचारनिष्ठ के प्रति स्नेहसिक्त, परोपकार-परायण, अपराजेय साहस, चिन्तन की गहराई, सामने वाले के मनोभावों को सहजता से ही ताड़ लेने का सामर्थ्य और अयाचित वात्सल्य उड़ेलने की उन्नतवृत्ति - यह है आपका महत्वशील अदृश्य व्यक्तित्व।

आपके व्यक्तित्व की स्फुट रेखाओं से आपको कुछ जानने का, समझने का प्रयास किया जा सकता है:

आत्मवान् व्यक्तित्व-

जीवन के दो पक्ष हैं- एक मुख्य और दूसरा गौण। मुख्य वह है जो किसी भी स्थिति में छोड़ा न जा सके। गौण कार्य वह है जिसे किया हो या न किया हो फिर भी चल सकता है। आचार्य महाश्रमण एक अध्यात्म पुरुष हैं और आपका मुख्य कार्य है अपनी आत्मा में स्थित रहना। आपका हर कार्य, हर लक्ष्य का केन्द्र आत्मा रहता है। वास्तव में आप एक आत्मवान् व्यक्तित्व के धनी हैं।

आप आत्मवान् भी हैं और विद्वान भी। विद्वान को गंभीर भी होना चाहिए, आप सागर से भी ज्यादा गंभीर हैं। न जाने कितनी-कितनी अनुकूल या प्रतिकूल बातों को आप पचा जाते हैं, भूला देते हैं। कई आवश्यक तथ्य आप चिरकाल तक याद रखते हैं पर इसका प्रतिभास किसी को नहीं होने देते।

अप्रमादी व्यक्तित्व -

आचार्य महाश्रमण का जीवन अप्रमाद चेतना की जीवंत मिसाल है। आपका पूरा जीवन अप्रमत्तता की अवस्था में रहा है। हर छोटी से छोटी बात, हर छोटे से छोटे कार्य में आप हमेशा पूर्ण सजग और सावधान रहते हैं। भगवान महावीर की जागरूकता के सूत्र को आपने आत्मसात् कर लिया है। इसीलिए आपका आहार संयम वाणी संयम, निद्रा संयम और उपकरण संयम इतना प्रशस्त है कि देवता भी प्रणत हो जाए। आपका जीवन भाव साधुता को पूर्ण चरितार्थ करने वाला है। कहा गया है-

क्षान्त्यादि गुण संपन्नो, मैत्र्यादि गुण भूषितः।
अप्रमादी सदाचारी, भाव साधुः प्रकीर्तितः।।

आचार्य महाश्रमण को हम चाहे किसी भी कोण से समझें उनमें भाव साधुता की झलक स्पष्ट मिलती है। यह भाव साधुता आत्म स्मृति या अप्रमादी व्यक्तित्व का ही दिग्दर्शन है। आत्म स्मृति जागरूकता, सजगता और सावधानी की जो बात है, वास्तव में साधना का महान सूत्र है, वह सूत्र है - अप्रमाद। अप्रमाद एक सशक्त साधन है आत्म स्मृति का।

आत्मानुशासित व्यक्तित्व -

प्रत्येक जीवन का उद्धेश्य है लक्षित मंजिल को प्राप्त करना। लक्ष्य प्राप्ति की सफलता के लिए अनुशासन जरूरी है। अनुशासन यानि नियंत्रण। गुरु का अनुशासन बहुत महत्वपूर्ण है। वह हितानुशासन है। गुरु के हितप्रद अनुशासन को झेलने वाला, शिरोधार्य करने वाला, उसकी आराधना करने वाला, पनाह में रहने वाला अपनी चाह के अनुरूप राह पा लेता है। एक विचारक ने लिखा है-

Discipline is the refining fire by which talent becomes ability.

अर्थात् अनुशासन परिष्कार की अग्नि है जिसमें प्रतिभा योग्यता बन जाती है।

आचार्य महाश्रमण का व्यक्तित्व आत्मानुशासित है। आप एक कुशल अुनशास्ता हैं, औरों पर अनुशासन भी करते हैं पर आप पहले स्वयं आत्मानुशासित है। आपका अपने शरीर, इन्द्रियों, वाणी और मन पर गजब का अनुशासन है। अनुशासन वहां अपेक्षित होता है जहां संवेगों पर नियंत्रण न हो, कषाय की प्रबलता हो और इच्छाएं असीम हो। साधना की सफलता एवं जीवन का आनन्द तो आत्मानुशासन में ही सन्निहित है। जो अपने पर अनुशासन कर सकता है वह औरों पर अनुशासन करने के लिए योग्य बन सकता है।

समर्पणशील व्यक्तित्व -

समर्पण एक सहज सर्वोत्तम मानवीय गुण है। किसी पर अटूट विश्वास करके सर्वस्व अर्पण करना ही समर्पण है। समर्पण में सहजता और स्वाभाविकता होती है। समर्पण व्यक्तित्व को नई ऊंचाइयां प्रदान करता है, समर्पण प्रत्येक क्षेत्र में तुलनात्मक रूप से अधिक सफल बनाता है।

आचार्य महाश्रमण श्रद्धा और समर्पण की अनुपम हस्ती है। आपका सम्पूर्ण जीवन समर्पण के धरातल पर टिका है। आचार्य तुलसी ने कहा है-

"अपने प्रति गुरु के प्रति, और लक्ष्य के हेतु।
सहज समर्पण भाव है, स्वयं सिद्धि का सेतु।।"

आपका समर्पण अपनी आत्मा के प्रति जितना है उतना ही अपने गुरु और लक्ष्य के प्रति भी है। आपका अपने आराध्य के प्रति समर्पण दूध और पानी की एकात्मकता की तरह है।

समर्पण स्वयं को स्वयं से परिचित कराता है, आत्म-मूल्यांकन का अवसर प्रदान करता है। धैर्य क्षमता में अभिवृद्धि कर अनुभवों को परिपक्व करता है। गुरु कृपा की अगम्य अचिन्त्य शक्ति का अनुभव ह्रदय की आस्थाशील रेखाओं में देखा जा सकता है।

श्रमप्रधान व्यक्तित्व -

आचार्य महाश्रमण का पुरूषार्थ पर अटूट विश्वास है। श्रम आपके जीवन का क्रम है। भाग्यवाद की दुहाई देने वालों की अकर्मण्यता पर आप हंसते हैं और पुरुषार्थवाद की कठोरता पर फलदायी छाया में पलने वाले को आप आशा भरी दृष्टि से देखते हैं।

जहां राह है वहां तो हर कोई आ - जा सकते हैं पर जो नई राह ढूंढ निकाले और उसको साध्य से जोड़ दे वह पुरूषार्थी है। बिना राह जो चल सके, बिना आंख जो देख सके वह पुरुषार्थी है। श्रम पुरूषार्थ का प्रतीक है। दिन-रात व्यस्त रहना श्रम की पराकाष्ठा है। इस व्यस्तता में भी आनन्द का स्राव होता है तभी तो आप उसमें सदा संलग्न रहते हैं। आपके पुरुषार्थी व्यक्तित्व ने उन लोगों को जगाया है जो सुखवाद और सुविधावाद के आदी बन गए हैं तथा संबोध दिया है उन्हें जो जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों को कल पर छोड़ देने की मानसिकता से घिरे हैं। जबकि जीवन का सच यही क्षण है। बीता हुआ कल और आने वाला कल तो सिर्फ समय की दो संज्ञाएं हैं।

जहां श्रम की चेतना नहीं होती वहां जीवन के छोटे-छोटे कार्य भी उत्तेजना जगाती है। श्रम ही उपासना है। श्रम ही सफलता की सीढ़ी है। भगवान महावीर ने भी कहा है-

'शक्ति का प्रस्फोटन करने वाला ही मोक्ष का द्वार खोतला है।' आत्मबल और पुरूषार्थ से ही कार्य सिद्धि प्राप्त होती है बाह्य उपकरणों से नहीं। अंतः करण की सच्ची लगन से किया गया पुरूषार्थ कभी विफल नहीं होता।

पुरुषार्थ से ही आपके जीवन में प्रकाश और विकास का अभ्युदय हुआ है। जो संयम के प्रति जागरूक-समर्पित होता है, इन्द्रियों विषयों में अनाकृष्ट होता है और राग-द्वेष विजेता बनने का लक्ष्य सतत् सामने रखता है वही गौरवत्रयी का विसर्जन करता है। आप सदैव यही सोचते हैं कि पुरूषार्थ से समस्याओं के घेरे को चीरकर सहज ही बाहर निकला जा सकता है।

पुरुषार्थ का सम्यक् नियोजन, जीवन की हर समस्या संकुल अंधेरी राह में उजाला करने वाला है। पुरूषार्थ हर कांटे को फूल और हर कठिनतम शिलाखण्ड को मोम बना सदाबहार कलाकृतियां उकेर देता है। पुरुषार्थ ही अभाव की आग में झुलसते रेगिस्तान को नंदनवन में परिवर्तित कर देता है।

आप युग संत हैं इसलिए नहीं कि आप महाव्रतों की साधना करते हैं या आपके लाखों अनुयायी हैं या आप तेरापंथ संगठन के एक मात्र नियंता हैं बल्कि इसलिए कि आप युग की समस्याओं को युग के नेत्रों से देखते हैं और उसका समाधान भी युग के साधनों में ही देने का प्रयास करते हैं।

वाणी और कर्म में अविपर्यास, श्रम की अविकलता स्नेह और वात्सल्य की अकृत्रिमता, वाणी में मितभाषिता, आचार के प्रति प्रेम, अनाचार के प्रति कठोरता, दैहिक आवश्यकताओं के प्रति उदासीनता, ध्येय के प्रति जागरूकता, रहन-सहन में कलात्मकता, समय को सार्थक बनाने की उद्योगपरकता-

यह है एक रेखाचित्र आचार्य महाश्रमण का। ऐसे विरल और विराट व्यक्तित्व के संयम जीवन के 50वर्ष की सम्पन्नता पर नमन-नमन-नमन।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

सार्थवाह की अनूठी संभाल

● साध्वी सार्थकप्रभा ●

इन्द्रभूति गौतम भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य थे। भगवान ने प्रथम दर्शन में ही उनकी जिज्ञासा को समाहित कर उन्हें अध्यात्म का आलंबन दिया और श्रद्धा की नींव को गहरी कर दी। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी एक विरले महापुरुष हैं जो तीर्थंकर वर्द्धमान के समान अव्यक्त प्रश्नों को अपनी अनोखी शैली से समाहित कर अध्यात्म के पथ को प्रशस्त करते हैं।

कई महिनों पहले की बात है- मेरे मन में प्रश्न आया कि- आचार्यों की वंदना में हम 'भव-भव में आपकी शरण आपका आधार' कहते हैं पर ये कैसे संभव है? क्योंकि आचार्यों के तो उत्कृष्ट तीन (या) पांच भव ही होते हैं और हमारे कितने भव, कितना समय अवशेष है, इसकी पूरी जानकारी नहीं है, फिर ये कैसे घटित होगा? संयोग की बात है, उन्हीं दिनों मैं एक श्राविका के साथ तत्त्वचर्चा कर रही थी। अनायास ही उसने मुझे पूछा- आपने आज का प्रवचन सुना? मैंने कहा- 'नहीं उसने कहा- आज गुरुदेव ने प्रवचन में पूछा- 'भव-भव में आपकी शरण, आपका आधार' से क्या तात्पर्य है? प्रश्न को सुनते ही मेरे मन में विस्मय-मिश्रित प्रसन्नता हुई। विस्मय इसलिए कि बिना पूछे मेरा प्रश्न गुरुदेव तक कैसे पहुंच गया, और प्रसन्नता इसलिए कि स्वयं गुरुदेव ने एक ही वाक्य में मेरा प्रश्न समाहित कर दिया। प्रवचन में प्रश्न का समाधान देते हुए गुरुदेव फरमाते हैं- 'भव-भव में आपकी शरण आपका आधार अर्थात भव-भव में सुदेव, सुगुरू और वीतराग धर्म की शरण है।' ऐसी अनेक घटनाएं हैं जहां पूज्य प्रवर ने अपने भक्तों की अव्यक्त जिज्ञासाओं को समाहित किया और उनकी श्रद्धा को सुदृढ़ किया।

गुरु केवल बिना पूछे प्रश्नों का समाधान ही नहीं देते अपितु बिना बताए मन की अस्थिरता को भी समझ लेते हैं और उसे स्थिर करके नवीन पथ प्रशस्त करते हैं। इतिहास की प्रसिद्ध घटना है मुनि मेघकुमार की। मुनि मेघ दीक्षा की प्रथम रात्रि में अस्थिर हो गए। उनके सामने तीन कठिनाईयां आई-

कठोरो भूतलस्चर्शः स्थानं निर्ग्रंथसंकुलम्।
मध्येमार्ग शयानस्य, विक्षेप, निन्यतुर्मनः।।

पहली कठिनाई- भूतल का कठोर स्पर्श, दूसरी कठिनाई- उस स्थान में बहुत बड़ी संख्या में निर्ग्रंथ, तीसरी कठिनाई- आते-जाते हुए निर्ग्रंथों के स्पर्श से उसकी नींद में बाधा पड़ रही थी। इन तीन बातों ने मुनि मेघ के मन को चंचल बना दिया। वह सोचने लगा कब यह रात बीते और सूरज उगे और कब भगवान महावीर के पास जाऊं और कहूं कि संभालो अपना साधुपना। चिर प्रतीक्षित सूर्य की पहली किरण प्रकट हुई। अस्थिर विचारों के साथ वह भगवान महावीर के पास पहुंचा। वंदना कर पर्युपासना करने लगा। वह कुछ बोले इससे पहले ही भगवान ने उसके मन के भावों को जान लिया और सोचा इसे संभालना चाहिए। दुनिया में ऐसे महान व्यक्ति भी होते हैं जो गिरते हुए का हाथ थाम लेते हैं। परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी भी ऐसे विरले महापुरुष हैं जो प्रत्यक्ष और परोक्ष अपनी अनूठी शैली से न जाने कितने-कितने लोगों को संभाल रहे हैं। इस संसार में मुनि मेघ की तरह अनेक व्यक्ति ऐसे हैं जिनका मन प्रतिकूल परिस्थितियों में अस्थिर हो जाता है। ऐसी ही मानसिक अवस्था वाले एक श्रावक ने अपने अतीत की घटना का उल्लेख करते हुए कहा- पांच-सात वर्ष पहले मैं आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक सभी ओर से तनावग्रस्त था, अवसाद की स्थिति में था। उन दिनों मैं गुरुदेव के दर्शनार्थ आया। चूंकि शेष काल था, जनता का आवागमन भी कम था। मैं आचार्यप्रवर के कक्ष के एक कोने में बैठ गया। कुछ समय बाद पूज्यप्रवर ने इशारे से मुझे चरणस्पर्श का संकेत किया।

एक बार तो मैं सहम गया पर हिम्मत जुटाकर मैं गुरुदेव के पास गया और चरण स्पर्श किया। गुरुदेव ने मुझे पूछा मन में क्या बात है? गुरु के पूछने पर एक बालक की तरह मैंने सारी स्थिति सामने रख दी। आचार्यश्री ने मेरे मन की स्थिति को समझते हुए मुझे एक मंत्र दिया और अमुक अवधि तक तप करने का निर्देश दिया। अगले दिन पश्चिम रात्रि में पुनः चरण स्पर्श का इंगित किया। जैसे ही मैंने चरणस्पर्श किया मुझे अनुभव हुआ मेरे भीतर प्राणों का संचार हो गया है। गुरु के चरणस्पर्श और मंत्र से मेरे जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आ गया। आस-पास की सारी स्थितियां अनुकूल बन गई। अनुकूल परिस्थितियों में प्रसन्नता से समय व्यतीत करने लगा। तीन चार साल बाद जब गुरुदेव की सेवा में आया तो गुरुदेव ने पूछा- अब मन की स्थिति कैसी है? प्रश्न सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। मैंने सोचा- इतने वर्ष बीत जाने पर भी गुरुदेव ने मेरी संभाल की। मैंने गुरुदेव से निवेदन किया गुरुदेव की कृपा से अब सब कुछ ठीक है।

इतने विशाल धर्मसंघ को संभालने वाले गुरु एक छोटे से श्रावक की मनः स्थिति के प्रति भी इतने जागरूक हैं। गुरुदेव की उस सार-संभाल ने मेरे मन को ही स्थिर नहीं किया बल्कि संघ-संघपति के प्रति मेरी श्रद्धा को भी सुदृढ़ बना दिया। वास्तव में हम सौभाग्यशाली हैं ऐसे विशिष्ट महापुरुष का साया हमें प्राप्त है। कल्याण मंदिर स्त्रोत्र में कहा गया है-

भो! भो! प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निवृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्।

हम भी इस दीक्षा कल्याणक अवसर पर ऐसी ऊर्जा प्राप्त करें कि, प्रमाद को छोड इस मुक्तिपुरी के सार्थवाह - परम पूज्य आचार्यप्रवर के नेतृत्व में अध्यात्म की यात्रा में स्थिरता से आगे बढ़ते रहें।

'धी' सम्पन्न आचार्य महाश्रमण

● साध्वी आर्षप्रभा ●

जैन आगमों में आभिनिबोधिक ज्ञान के दो प्रकार बतलाए गए हैं-

श्रुत निश्रित मति और अश्रुत निश्रित मति।

अश्रुत निश्रित मति के चार प्रकार हैं-

1. औत्पत्तिकी बुद्धि
2. वैनयिकी बुद्धि
3. कार्मिकी बुद्धि
4. पारिणामिकी बुद्धि

औत्पत्तिकी बुद्धि- अदृष्ट, अश्रुत और अनालोचित विषय को तत्काल यथार्थ रूप से ग्रहण करने वाली बुद्धि।

ऐसे सुना एवं पढ़ा है कि तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम अधिशास्ता औत्पत्तिकी बुद्धि के धनी थे। हमने उन्हें तो नहीं देखा परन्तु उन्हीं के परम्परा पट्टधर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता की औत्पत्तिकी बुद्धि का साक्षात्कार किया है। तत्वज्ञान में कई गहरे तथ्य आते हैं। उन तथ्यों में से एक हैं- चारित्र इहभविक है। वह इसी भव तक सीमित है।

अगले जन्म में साथ नहीं जाता। इसको आचार्य श्री महाश्रमण ने अपने औत्पत्तिकी मेधा से उदाहरण के द्वारा समझाया। जैसे कोई गृहस्थ परदेश में कमाई के लिए जाता है, वहां दुकान बनाता है और बहुत अर्थार्जन करता है। कुछ समय बाद अच्छी कमाई करके वह पुनः अपने देश लौटता है। उस समय उसकी दुकान साथ नहीं जाती किन्तु कमाई साथ जाती है। ठीक इसी प्रकार साधुपन साथ नहीं जाता, साधुत्व से जो संयम और निर्जरा की कमाई होती है, वह हमारे साथ जाती है।

वैनयिकी बुद्धि- गुरुजनों के विनय से उत्पन्न होने वाली बुद्धि।

विनय कई प्रकार के होते हैं। हमने आचार्यप्रवर में रत्नाधिकों के प्रति विनय एवं छोटों के प्रति सम्मान के भाव देखे। जब भी कोई रत्नाधिक पूज्यवर के सम्मुख आते हैं अथवा आचार्यप्रवर के दुष्टिगोचर भी हो जाते हैं तो प्रायः आपके हस्तकमल उनके अभिवादन में जुड जाते हैं। प्रवचनों में या गोष्ठी आदि में यदि कोई वृद्ध या अक्षम साधु-साध्वी आए तो आचार्य प्रवर उनके लिए कुर्सी की व्यवस्था कराते हैं। जब-जब कोई धर्मसंघ की महत्वपूर्ण घोषणाएं अथवा कोई कार्यक्रम होते हैं तो आचार्य श्री अपने पूर्वाचार्यों का स्मरण करते हैं। यह उनकी उत्कृष्ट विनम्रता और श्रद्धा के उदाहरण हैं।

आचार्यश्री महाश्रमण का ज्ञान विनय भी अनुत्तर है। आचार्यश्री किसी ग्रंथ का वाचन या किसी कक्षा से पूर्व 'णमो उवज्झायाणं' का उच्चारण करते हैं। प्रवचन आदि में फरमाते-फरमाते कोई त्रुटि न हो इसलिए 'ज्ञान की आशातना न हो' आदि शब्दों का उपयोग करते हैं। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण की तीक्ष्ण मेधा को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसका एक कारण है- आचार्यप्रवर की विनयशीलता।

संस्कृत का एक सूक्त है- विद्या विनयेन शोभते अर्थात् विद्या विनय से सुशोभित होती है। आपके जीवन में यह उक्ति भी चरितार्थ होती है- विद्या विनयेन वर्धते अर्थात् विद्या विनय से वर्धमान होती है।

कार्मिकी बुद्धि- अभ्यास करते-करते उत्पन्न होने वाली बुद्धि।

यह कार्य में गहरी एकाग्रता से उत्पन्न होती है। कुछ दिनों पूर्व का प्रसंग है- पूज्य प्रवर ने साध्वियों को एक श्लोक सिखाया-

'त्रिविधं नरकस्येदं, द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्, तस्मातेतद् त्रयं त्यजेत्।।

आचार्य प्रवर से पूछने पर बताया गया कि वह भगवद् गीता के सोलहवें अध्ययन का श्लोक है। आश्चर्य होता है कि भगवद् गीता जैसे ग्रंथ के कुछ अध्ययन जो आपने बचपन में याद किए थे वह अभी भी आपके स्मृतिपटल में है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आचार्यश्री महाश्रमण की एकाग्रता और कार्य में दत्तचित्तता शुरू से ही अनुत्तर थी। आचार्य प्रवर ने अंग्रेजी की इस कहावत - 'Practice makes a man perfect' को अपने जीवन में आत्मसात कर लिया है।

चाहे अंग्रेजी हो या संस्कृत आचार्यश्री के भाषा ज्ञान में निखार एवं कौशल है। यह आचार्य प्रवर की कर्मजा बुद्धि का ही परिणाम है।

पारिणामिकी बुद्धि- अवस्था के परिपाक से उत्पन्न होने वाली बुद्धि।

आचार्यश्री महाश्रमण ने एक दिन प्रवचन में कहा कि आचार्य में इतनी क्षमता होनी चाहिए कि वह किसी भी प्रकार का निर्णय निर्भीकता से ले सके। चाहे वह भयंकर भूकंप की स्थिति हो या भयावह कोरोना महामारी का समय, साधन संबंधी, लोच संबंधी या अन्य आचार संबंधी निर्णय हो, आचार्य श्री महाश्रमण ने हमेशा साहसिक निर्णयों से संघ की सार संभाल की। परिणाम द्रष्टा आचार्य महाश्रमण कोई भी निर्णय करने से पहले उसके परिणाम पर चिंतन करते हैं। भविष्य को सुंदर बनाने के लिए सतत् प्रयत्नशील आचार्य प्रवर पारिणामिक मेधा के धनी हैं।

आगम में वर्णित इन चारों प्रकार की बुद्धि की उत्कृष्टता के कारण आचार्य प्रवर का व्यक्तित्व 'धी' सम्पन्नता से सुशोभित है। 'धी' सम्पन्न आचार्य महाश्रमण की शासना युगों-युगों तक युग का पथ दर्शन करती रहे।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

विलक्षण और विचक्षण आचार्य : आचार्यश्री महाश्रमण जी

● मुनि सिद्धप्रज्ञ ●

मानव धर्म के प्रभावक आचार्य – जैन धर्म के इतिहास में जितने प्रभावशाली आचार्य हुए उणमें यदि तुलना की जाए तो आचार्य महाश्रमण जी का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। आचार्य प्रवर ने जहां एक ओर कुशल अनुशास्ता की तरह तेरापंथ धर्मसंघ की अभूतपूर्व प्रभावना की वहीं दूसरी ओर अहिंसा यात्रा के माध्यम से देश और विदेश की न केवल यात्रा की अपितु वहां भूकम्प, भूस्खलन सर्दी, गर्मी एवं बारिश जैसे भयंकर परीषहों एवं कष्टों को समता एवं प्रसन्नता से सहन किया तो जन-जन मुखरित हो कहने लगा की हमने नेपाल में महावीर को देखा नहीं किन्तु महाश्रमण जी महावीर की तरह चमक रहे हैं। धन्य है आपकी सहिष्णुता, जागरुकता, पापभीरुता एवं अभय की पराकाष्ठा को। आपकी प्रभावकता दिन दूनी रात चौगुनी प्रर्वधमान होती रहे ।

समता की पराकाष्ठा – सन् 2000 मे गंगानगर अंचल की यात्रा में मैंने देखा एक बार मुनि योगेश कुमारजी को लेकर आचार्य प्रवर दोपहर की आग बरसाती कड़ी धूप में अचानक बाधा होने पर पंचमी के लिए बाहर पधारे करीब 2 KM से अधिक दूर जाने पर भी जब बाहर में उचित स्थान न मिलने पर भी आचार्य प्रवर समता एवं प्रसन्न भाव से वापिस अपने प्रवास स्थल पर पधार गए। आपश्री के अतिश्रम को देखकर साध्वी श्री जिनप्रभा जी ने निवेदन किया की आप इतना श्रम न कराएं क्योंकि अब यह शरीर आपका नही पूरे संघ का है।

जब दुःखी महिला का दुःख देख नहीं सके – सन् 2000 मे गंगानगर की बात है। एक बार पूज्यप्रवर घरों में पगलिये कराने के बाद पुनः भवन में पधारे तो देखा दो बहनें गुरुजी का इन्तजार कर रही थी। युवाचार्य प्रवर ने उन्हें दर्शन दिए तो बहनें अपना दुःख सुनाते-सुनाते सुबक सुबक कर रोने लगी और बोली - घर वाला कमाता नहीं और दो लड़के हैं, दोनों शराब पीते रहते हैं। ऐसे ही हम गरीब और ऊपर से इतनी सारी समस्या। अपना दुःख सुनाने क बाद फिर रोने लगी। गुरुदेव ने मुझे कहा तुम इनके घर जाओ और लड़कों को समझा कर हमारे दर्शन कराना। मैं अकेला उनके साथ उनके घर गया तो एक लड़के को समझा कर युवाचार्य प्रवर के पास लेकर आया। आपने उसे समझाकर शराब नहीं पीने का संकल्प कराया। परिवार को आध्यात्मिक संबल प्रदान कराया तो परिवार के लोग बहुत खुश हुए और दुःख से मुक्त हो गए।

बात कहने का तरीका अच्छा लगा – सन् 2007 में आचार्य महाप्रज्ञजी का चातुर्मास उदयपुर में था। श्रावक कार्यकर्त्ता रतनलाल चौपड़ा ने मुझे कहा- आपको युवाचार्य प्रवर ने याद किया। मैंने दर्शन किए तो मुझे पूछा कि तुम्हें अपने परिवार की याद नही आती क्या? मैंने कहा नहीं। फिर पूछा कि माता से बात होती है क्या? मैंने कहा नहीं। फिर पूछा कि माता से मोह तो नहीं है न? मैंने कहा नहीं, बिलकुल नहीं। फिर युवाचार्यश्री ने फरमाया कि उनका स्वर्गवास हो गया। माता के जाने की घटना का मेरे मन के अंदर जरा भी असर नही हुआ। रात नींद भी अच्छे से आ गई थी। ये सब आचार्यश्री के कहने की कला का परिणाम था। वर्ना ये बात यदि और कोई अचानक कहे तो सुनने वाले का पहले स्वर्गवास हो जाये। सुबह गुरुदेव ने कहा कि तुम उज्जैन जाकर परिवार वालों को आध्यत्मिक सम्बल प्रदान कर देना। जब आचार्य महाप्रज्ञजी को पता चला तो आचार्य प्रवर ने मुझे संबल प्रदान करते हुए मेरी संसारपक्षीय माता चन्दा बाई बोरदिया को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' सम्बोधन प्रदान किया।

अनुशासन का तरीका मन को बहुत लुभाया – सन् 2014 के गंगाशहर महोत्सव की बात है। दोपहर को मैं भिक्षा की आज्ञा लेने गया। मुस्कुरा कर अच्छा कहते हुए इशारे से पास में बुला कर कहा- यहां जो भी गोष्ठी होती है उसमें भाग ले सकते हो। मैं खुश होकर जाने लगा तो फिर बुलाया और कहा कहीं भी जाओ तो आज्ञा लेकर जाया करो। मैंने कहा तहत् गुरुदेव! मैं प्रायः आज्ञा लेकर जाता हूं। तब गुरुदेव ने मृदु अनुशासन करते हुए कहा - आज सुबह तुमने प्रातःराश की आज्ञा नही ली? मैंने कहा कि भंते! आज सुबह मैंने नाश्ता ही नहीं किया। तो पूछा क्यों ? तब मैंने कहा- गुरुदेव आज शनिवार है और मैं शनिवार को एकासन करता हूं। गुरुदेव को बहुत प्रसन्नता हुई और मुझे इस बात की खुशी हुई कि इतना बड़ा संघ है और मेरे जैसे इतने छोटे समण का भी कितना गुरुजी ध्यान रखते हैं।

लगता है अवधिज्ञान हो गया – सिलीगुड़ी मर्यादा महोत्सव के बाद मुझे भी कुछ दिन साथ में चलने का मौका मिला। एक दिन की बात है गुरुदेव करीब 5 से अधिक किलोमीटर विहार होने के बाद अचानक रुके और साथ मे चल रहे संतों से पूछा कि पीछे कोई सतियां तो नहीं रही? संतों ने कहा - नहीं। गुरुदेव फिर कुछ आगे बढे फिर रुके और फिर संतों से पूछा पीछे कोई साध्वियां तो नहीं रह गई? मुनि कुमारश्रमण जी ने कहा - गुरुदेव सबसे अंत में हम आये थे और हमारे पहले प्रायः सतियां आगे आ गई थी।

गुरुदेव आगे बढ़ने लगे तभी एक आदमी मेरे पास आया और बोला पीछे साध्वियां धीरे-धीरे आ रही हैं। मैंने कहा गुरुदेव को अर्ज कर दो। उसने गुरुदेव को अर्ज किया। सब संतों को आश्चर्य हुवा की आचार्यप्रवर को कैसे पता चला कि सतियां पीछे रह गई। आचार्यप्रवर ने इंतजार किया कि सतियां आ जाए। कुछ समय बाद कुछ साध्वियां आई। गुरुदेव ने कारण पूछा कि पीछे कैसे रह गई तो सतियों ने बताया कि साधन की हवा निकल गई थी, हवा भराने में लेट हो गए। इस घटना से लगता है कि गुरुदेव को अवधिज्ञान हो गया हो। दूसरा उदाहरण सन् 2016 का है। 'शासनश्री' मुनि सुरेशकुमार जी एवं मुनि संबोधकुमार जी के साथ उज्जैन में कुंभ मेले में रहने का दुर्लभ मौका मिला। गुरुदेव ने गुलाब बाग बिहार में कहा कि मेले में कच्चे दीवार के मकान में नहीं रहना अर्थात पक्के दीवार वाले मकान में रहना। अचानक तेज तूफान आया और बड़े-बड़े टेंट तंबू आदि हवा से गिर गए और हमारे प्रवास का पक्का मकान नहीं गिरा। हम सब गुरु कृपा से बच गए। इस तरह की अनेक छोटी-मोटी घटनाएं हैं जिससे यह स्पष्ट लगता है कि गुरुदेव को अवधि ज्ञान हो गया है।

निष्कर्ष – आचार्य श्री महाश्रमणजी का जन्म तेरापंथ का भाग्योदय है। आचार्य प्रवर की दीक्षा तेरापंथ की सुरक्षा है। आचार्यश्री का महातपस्वी होना पुरुषार्थ की गौरव गाथा है और उनका आचार्य होना जैन धर्म का शुभ भविष्य है।

दिव्य ऋद्धियों के स्वामी : आचार्यश्री महाश्रमण जी

● डॉ. मुनि विनोद ●

आचार्य की तीन प्रकार की ऋद्धियों के दो विकल्प बताएं हैं। ऋद्धि का अर्थ होता है - ऐश्वर्य अथवा वैभव सम्पदा। प्रस्तुत सूत्र में वर्णित इन छह ऋद्धियों की अपेक्षा से युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के जीवन को देखा जाए तो इन ऋद्धियों की ऊंचाई और गहराई की असीमता का वर्णन करना कठिन होता है।

1. आचार्य की पहली ऋद्धि है - ज्ञान ऋद्धि। आचार्य श्री के ज्ञान की सूक्ष्मता और विराटता का आभास उनकी ज्ञानाराधना को देख कर लगता है। सूत्रों का कोई विषय हो या सूत्रों के अर्थों का अथवा किसी व्यवहारिक प्रश्न का, आचार्य प्रवर उनकी व्याख्या इतनी सटीक करते हैं कि श्रोता अथवा पाठक की जिज्ञासा सहज ही समाहित हो जाती है। ज्ञान की इस ऋद्धि से वे अपनी शिष्यों की ज्ञान चेतना को जागृत रखते हैं।

2. दूसरी ऋद्धि है - दर्शन ऋद्धि। ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य देव की श्रद्धा मानो वज्र की बनी है। बाल्यावस्था में ही उन्होंने सिद्ध कर दिया था कि भले ही परिस्थितियों का कितना ही आरोह-अवरोह आए सम्यक्त्व को कोई आंच नहीं आई। इस ऋद्धि से वे अपने शिष्यों की श्रद्धा को सुदृढ़ रखते हैं।

3. तीसरी ऋद्धि है - चारित्र ऋद्धि। आचार्य प्रवर की चारित्र ऋद्धि सिद्ध शिला के श्वेत स्फटिक की भाँति पवित्रतम है। महाव्रत, समिति, गुप्ति आदि आगमिक आचार हो या संघीय मर्यादाएँ इनका पालन आप आहिताग्नि कृतांजलि की तरह करते हैं। चारित्र ऋद्धि के इस वज्र कवच में प्रमाद का एक नन्हा सा झोंका भी क्यों प्रवेश कर जाए। इस आत्म ऋद्धि के पुण्य प्रभाव से आप धर्म संघ में चारित्रिक उज्ज्वलता को बनाए हुए हैं।

4. चौथी ऋद्धि है - सचित्त ऋद्धि। यह सुयोग्य शिष्यों की ऋद्धि है। न केवल साधु-साध्वी और समण श्रेणी के सदस्य बल्कि श्रावक-श्राविकाओं की एक समृद्ध संख्या भी आपके हर इंगित को सहज रूप से सतत् शिरोधार्य करने को सदा तत्पर रहते हैं। अपनी इस सम्पदा से आप भैक्षव शासन का दिन दूना-रात चौगुना विकास कर रहें हैं।

5. पाँचवी ऋद्धि है - अचित्त ऋद्धि। यह बाह्य व्यक्तित्व की ऋद्धि है। व्यवहार जगत में बाह्य व्यक्तित्व का भी अपना महत्त्व होता है।

आचार्यश्री की यह ऋद्धि ऐसी है जैसे असंख्य तारों के बीच चन्द्रमा शोभायमान हो रहा हो। अपने गौर वर्ण, सौम्य मृदु मुस्कान युक्त आकर्षक, स्वस्थ व्यक्तित्व से आप जन-जन के आकर्षण के केन्द्र हैं। इस ऋद्धि से आप अपनी में शरण आने वाले के संताप को क्षण मात्र में तीर्थ के समान शीतल कर देते हैं।

6. छठी ऋद्धि है - मिश्र ऋद्धि। यह शिष्य सम्पदा की बाह्य और आभ्यन्तर व्यक्तित्व की ऋद्धि है। जैसे ऐसी मान्यता है कि चन्दन के वृक्ष के पास रहने वाले सामान्य वृक्षों में भी चन्दन के कुछेक गुण आ जाते हैं।

वैसे ही गुरु के प्रताप से शिष्यों की आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक उच्चता का मिश्र रूप यह ऋद्धि है। ये ऋद्धियां तो मात्र उल्लेख रूप में ही हैं। अनेक बार भगवान स्वरूप आचार्य प्रवर की दिव्य ऋद्धियों की अनुभूति भक्तगण अनुभव करते रहते हैं। उनकी प्रस्तुति तो अनेक ग्रंथों से भी संभव नहीं लग रही। पूज्य प्रवर के 50वें दीक्षा कल्याणक वर्ष के अवसर पर अनंत - अनंत वंदन अभिवंदन।

ये ऋद्धियां उत्तरोत्तर विकास के आसमान छूती रहे। गुरुदेव के पावन सान्निध्य में हमारी साधना और संघ सेवा चलती रहे- ऐसे आशीर्वाद की याचना।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

तेरापंथ शिरताज म्हाने आच्छा लागो जी

● मुनि तन्मयकुमार ●

तेरापंथ शिरताज म्हाने आच्छा लागो जी।
दुगड़ कुल उजियार म्हांने वाल्हा लागो जी।।

सरदारशहर में जन्म लियो थे दीक्षा मंत्री पास,
महाश्रमण रो चंदेरी में तुलसी हाथां ताज।

गंगाणे युव पद पर राज्या महाप्रज्ञ रो हाथ।
श्री सरदारशहर में आकर बणग्या गज रा नाथ।।

पहली यात्रा उदयपुर की (भेदपाट) कीन्ही आप दयाल।
चिंहु दिशी झण्डो लहरायो गदगद है मेवाड़।।

कोड दिवाली राज करो प्रभु तन्मय री आवाज,
म्हैं थारो चाकर सगला महर रखों तात।।

कलयुग बैठा मार

● साध्वी नंदिताश्री ●

महाश्रमण महायोगी के जीवन की गाथा गाएंगे,
उनके कदमों पर चलकर हम अपना भाग्य सजाएंगे।

महाप्रज्ञ के पट्टधर तुम हो, महातपस्वी कहलाए,
धरती के मंदार तुम हो, मां नेमां के घर आए।
तेरे इंगित पर चलकर हम, जीवन धन्य बनाएंगे।।

पौरुष के हो प्रखर पुंज तुम, अहिंसा परम पुजारी हो,
सुप्त चेतना जगे हमारी, प्रभु निर्ग्रन्थ विहारी हो।
मनमोहक मुस्कान से गण की, बगिया को सरसाएंगे।।

अमृत पुरुष तुम्हारी वाणी, युग को देती नवसंबल,
रहो निरामय शासन नायक, मिले सभी को आत्मिक बल।
पंचाचार की चले साधना, वरदान नया हम पाएंगे।।

ज्योतिचरण ज्योतिर्धर तुम हो, ईसा- बुद्ध-महावीर हो,
शबरी के ज्यों प्रभु घर आए, भैक्षव गण तकदीर हो।
रचो नया इतिहास मेरे प्रभो! युग-युग तुम्हें बधाएंगे।।

तुलसी का सुन्दर चयन

● समणी मृदुप्रज्ञा ●

वंदना लो वंदना, करते है अभिवंदना।
महाश्रमण गणराज, नेमासुख पे नाज।।

शुद्ध-बुद्ध सहजानंद, आत्मानंद साधना,
ब्रह्मचर्य है अखंड, निज स्वरूपाऽराधना।
शिवं-सत्य-सुन्दर गणशेखर योगीश्वरम।
जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण।।

वर्धापना शुभकामना है, तुलसी का सुन्दर चयन,
मोहन, मुदित से महाश्रमण संघ के तुम हो नयन।
ब्रह्मा, विष्णु, शिव हो, सबके तुम तकदीर हो।
जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण।।

शांतिदूत दिव्यदृष्टि, तिन्नाणं व तारयाणं।
हसरत यही मुमुक्षु आये परमार्थ की ओर बढ़े कदम।
कल्याण का मार्ग बने धर्म अनुरागी चले।।
जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण।।

महामहिम को शीष नवाएं

● साध्वी प्रेक्षाप्रभा ●

महातपस्वी गुरुवर पाए, महामहिम को शीष नवाएं।
शांतिदूत, नेमा सपूत को, पाकर दिल हरसाए।।

मोहन से बन गये मुदित, मुनि मुदित से महाश्रमण,
संघ शिरोमणि, समता शेखर, महके तेरा गण चमन।
भावों के भक्ति थाल सजाएं।।

आगम आस्था, सम्यक् रास्ता, मंजिल तक पहुंचाए,
परम ध्येय की पुनीत साधना, पथ पर कदम बढ़ाएं।
अन्तर ज्योति दीप जलाएं।।

साधना के सुरतरू तेरी, संयम तपमय छांव भली,
चरणों में पावन परिमल पा, मन की कली-कली खिली।
उपशम आभा में रम जाएं।।

सव्वभूयखेमंकरी, मंगलमय यात्रा प्यारी,
आभारी हर दिल का गुंजन, प्रभुवर महाउपकारी।
जीवन गुलशन को विकसाये।।

संयम शक्ति, जिनवर भक्ति, अभय मैत्री मन भाए,
अनासक्ति की विमल साधना, नूतन रंग रचाए।
श्रम सुरभि से गण महकाए।।

दीक्षा कल्याणक उत्सव है, मंगल गाएं बधाएं,
क्रोड दिवाली राज करो प्रभु, सुयश दशों दिशाएं।
हर क्षण शुभ सन्निधि हम पाएं।।

लय - झिलमिल सितारों

जीवन निर्माता प्रभुवर भाग्य विधाता

● साध्वी कुंथुश्री ●

अभिनन्दन शत-शत वन्दन, युग प्रधान गुरुराज।
गुरु महाश्रमण मिले हैं, सुरभित सुमन खिले हैं।
सुरभित सुमन खिले हैं, खुशियों के दीप जले हैं।

दीक्षा कल्याण महोत्सव हर्ष मनाएं,
आस्था के स्वस्तिक मंगल तिलक लगाएं,
भावों से करते हैं अर्चन सिद्ध बने सब काज।।

नेमानन्दन को पाकर संघ खुशहाल है,
अनुत्तर संयम समता तेजस्वी भाल है,
दशो दशाएं तुम्हें बधाएं करती हैं आगाज।।

जीवन निर्माता प्रभुवर भाग्य विधाता,
धन्य बन जाता जो भी चरणों में आता,
वर्षों की जागी पुण्याई हर्षित सकल समाज।।

संयम की अर्द्ध शती पर प्रभु को बधाएं,
आकर्षक आभामंडल मन को लुभाएं,
शांतिदूत भारत सपूत है दुनिया को नाज।।

वीतराग मोहक मुद्रा लगती मनहारी,
श्रुतधर महाश्रमण की महिमा है न्यारी,
युग-युग जीओ, रहो निरामय शासन के सरताज।।

लय - स्वर्ग से सुन्दर

जन-जन मन हरषाए रे

● साध्वी संवेगप्रभा ●

महाश्रमण दीक्षा कल्याणक, जन-जन मन हरषाए रे।
गण गौरव गाएं हो फूले न समाए, हम तुम्हें बधाएं।।

मां नेमां के लाल लाडले, झूमर कुल उजियार,
महाप्रज्ञ के सक्षम पटधर, श्रेष्ठ बने अणगार।।

महायशस्वी महातपस्वी, तुम हो पुण्य निधान,
वत्सलता के महासमन्दर, करते अमृतपान।।

चंदेरी में महाश्रमण पद, गंगाणे युवराज।
सरदारशहर में तेरापथ गण, के बन गए सरताज।।

छक्कम छक्का राज करो तुम, तेरापंथ गणेश।
दीर्घायु बन करो शासना, है शासन करूणेश।।

लय - इक झोली में

सौभागी हैं हम सारे

● साध्वी शांतिलता ●

सौभागी हैं हम सारे, जागे हैं भाग्य सितारे,
भैक्षव शासन रखवारे, चरणों में जीवन वारें,
गुरुवर तो हमारे प्यारे हैं, जीवन के सहारे हैं।।

भी. भा. रा. ज. म. मा. थे, तेरापंथ सितारे,
डालिम, कालू, तुलसी, महाप्रज्ञ मन हारे।
अब महाश्रमण का साया, भाग्यों से तुमको पाया,
झूमर नेमा का जाया, जन-जन के मन को भाया।।

एकादशमाधिशास्ता, महाश्रमण अनुशास्ता,
विनय नम्रता से हुए, दीक्षित बाल्यावस्था।
मोहन से मुदित बने तुम, संघ के सिरताज बने तुम,
हम सब के नाथ बने तुम, गण के सिरमौर बने तुम।।

पिता झूमरमलजी, नेमादेवी माता,
सुद नवमी वैशाखे, दूगड़ कुल मुस्काता।
शैशव में संयम धारा, तोड़ी कर्मों की कारा,
तुलसी गुरुवर का प्यारा, चमका बनकर ध्रुवतारा।।

गुरु तुलसी ने परखा, कोहिनूर हीरा,
महाप्रज्ञ पट्टधारी, महाश्रमण गंभीरा।
अनुशासित जीवन शैली, सुलझे गुत्थी या पहेली,
मस्ती तेरी अलबेली, सीधी है प्रवचन शैली।।

अर्धशताब्दी आई, सबमें खुशियां छाई,
अमृत महोत्सव दीक्षा की, बाजी है शहनाई।
जीओ तुम वर्ष हजारों, मंगल भावों को स्वीकारों,
हम सबकी नैय्या तारो, भव-भव से पार उतारो।।

लय - सूरज कब दूर गगन से

- व्यक्ति नशे के दुष्परिणामों को समझ ले तो नशे की लत से छुटकारा मिल सकता है। गलत कार्यों में व्यक्ति धन का नियोजन क्यों करें?
- दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं- मनुष्यता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

-आचार्य श्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विशेष

स्वर्ण जयन्ती आई

महाश्रमण दीक्षा कल्याणक स्वर्ण जयन्ती आई,
भक्त खड़े अभिनन्दन करते, अतुलित श्रद्धा छाई।

युगप्रधान के अवदानों से, जन-जन आभारी है,
विश्व-शान्ति की हो स्थापना, नित प्रयास जारी है।।

जन्मदिवस तिरसठवें पर, गण का उपवन हर्षित है,
नैतिकता को लायेंगे हम, जन-मन संकल्पित है।
भवन बहुत से, बने समाज में, श्रावक उत्साह बढ़ा है,
ज्योति-चरण जयकार जगत में, धर्म शिखर पे चढ़ा है।।

पन्द्रहवें पद-अभिषेक की, अदभुत छटा निराली,
उद्बोधन नित गुरु का पाकर, बन गए गौरवशाली।
तुलसी-तेज, महाप्रज्ञ प्रज्ञा, यह दोनों की प्रतिमा है,
महा तपस्वी महावीर - सी, देखी तेरी महिमा है।।

तिल-तिल करते जाते पातक, ऐसी तेरी सन्निधि है,
आध्यात्मिक उत्कर्ष तुम्हारा, मंगल तुझमें सिद्धि है।
मानवता का त्राण कर रहे, यह संकल्प तुम्हारा है,
अब तो भव के पार ले चलो, जहाँ सिर्फ उजियारा है।।

सुनीता सुराणा, दिल्ली

मानवता के सृजनहार

उज्ज्वलतम दीक्षा कल्याणक, स्वर्णिम पांच दशक हैं।
महातपस्वी महाश्रमणवर, जीवन अति प्रेरक है।।

अप्रमाद की प्रतिमा, जिनका कण-कण जागृतिमय है।
चरैवेति है जीवनवृत्त, महापुरुष सदा गतिमय है।।

तुलसी महाप्रज्ञ गुरुद्वय की, निरखें अनुपम कृति हैं।
पापभीरुता वाणी संयम, सहज सहचरी धृति है।।

अतिशय सौभागी हम ऐसे अनुशास्ता को पाकर।
संघ शिरोमणि युगप्रधान, हे एकादशम् दिवाकर।।

पथदर्शन पाकर तेरा हम, सत्पथ पर बढ़ जाएं।
तेरे आदर्शों को हम निज आचरणों में लाएं।।

तेरी शीतल छत्र छाँव में, मोद मनाएं अविकल।
हो सुदीर्घतम संयम यात्रा, स्वस्थ निरामय पल-पल।।

तरुण सेठिया, कोलकाता

जिनका सदा करूं स्मरण

प्रातः उठकर नित करता हूँ जिनका सदा स्मरण।
रोग-शोक सब दूर भगाते, मेरे महाश्रमण।।

सदा प्रसन्नचित्त हैं रहते, करते आत्मरमण।
अज्ञान तिमिर को दूर भगाते, मेरे महाश्रमण।।

जिनकी अमृत वाणी सुन के, मिटते जन्म मरण।
भटकों को भी राह दिखाते, मेरे महाश्रमण।।

जिनके दर्शन से हो जाता, भक्तों का कर्म क्षरण।
इस दुनिया की शान बढ़ाते, मेरे महाश्रमण।।

छा जाती घर-घर खुशहाली, पड़ते जहां चरण।
सब ऋतुओं में समता धरते, मेरे महाश्रमण।।

जिन वाणी का मर्म सुनाते, हर्षित करते कण-कण।
पाप ताप संताप मिटाते, मेरे महाश्रमण।।

जिनकी सौरभ से सुरभित है, नंदन वन सा यह गण।
जिन शासन की आब बढ़ाते, मेरे महाश्रमण।।

भूपेंद्र डागलिया

मानवता के सृजनहार

नेमानंदन गणचंदन मानवता के सृजनहार।
ज्योतिचरण चरणों में श्रद्धा का अनुपम उपहार।

है व्यक्तित्व निराला आला, देवतुल्य कर्तृत्व तुम्हारा।
भैक्षवगण के सरताज, अभिनंदन करता जग सारा।
कलाकार पारखी रत्नों के, हो तुम गण के आधार।
नेमानंदन गणचंदन मानवता के सृजनहार।।

दो गुरुओं की नजरों से मिला 'महाश्रमण' संघ नजारा।
देख-देख दो नयनों से पुलकित होता हृदय हमारा।
पद् चिन्हों से धरती मापी, पधारे भारत भूमि पार।
नेमानंदन गणचंदन, मानवता के सृजनहार।।

तुलसी महाप्रज्ञ अहींसा यात्रा, अणुव्रत का अभियान।
सारथी स्वयं बने, मिला जन-जन को वरदान।
गण को गगन शिखरों चढ़ाया, महाश्रमण गण श्रृंगार।
नेमानंनदन गणचंदन, मानवता के सृजनहार।।

शासनमाता का सम्मान बढ़ाया, प्रमुखाश्री जी शान।
तेरापंथ का बढ़ा चहुंदिशि में सम्मान।
वृद्ध, युवा, बाल सभी को मिला विपुल संस्कार।
नेमानंदन गणचंदन, मानवता के सृजनहार।।

दीक्षा कल्याण पूर्ण वर्ष हुवे पच्चास।
जन्म जयंती वर्ष तरेसठ, संघ मनावे खास।
'कुन्दन' वंदन अभिनंदन करे चरणों में शत-शत बार।
पन्द्रवां पदाभिषेक दिवस, मन में हर्ष अपार।
नेमानंदन गणचंदन, मानवता के सृजनहार।।

कुन्दनमल 'कुन्दन' आमेट

युगों युगों तक अमर रहेगा

युगों युगों तक अमर रहेगा, महाश्रमण तेरा नाम,
तुमको कोटि-कोटि प्रणाम।

नशामुक्ति का पाठ पढ़ाया, मानवता का शंख बजाया,
प्रान्त-प्रान्त में विचर-विचर कर, नैतिकता का ध्वज लहराया,
चारों और चमकता है यह अणुव्रत सूर्य प्रकाश।।

सत्य अहिंसा के पुजारी, श्रमण संघ के हो अधिकारी,
जन-जन की नैया को तारी, खिल रही तेरी गण फुलवारी,
गुरुवर तेरे दर्शन जग में, परम शांति का धाम।।

मैत्री का संदेश सुनाते, आत्म शान्ति का पाठ पढ़ाते,
सद्भावों का मोल बताते, समता को साकार बनाते,
अन्तर-अरि का दमन किया है, कर सच्चा संग्राम।।

श्रमण संघ के तुम सैनानी, शास्त्रों के तुम अभिनव ज्ञानी,
सुधा भरी तव मंजुल वाणी, शिवपुर की है सही निशानी,
जिन शासन की वृद्धि करते, दिये अनेक अवदान।।

महाश्रमण तुम तरुण तपस्वी, महाश्रमण तुम परम यशस्वी,
महाश्रमण तुम महा मनस्वी, महाश्रमण तुम मधुर वचस्वी,
'तेरापंथ-विश्व-भारती' का, तूने किया आगाज,
सह्याद्री पर्वतमाला पर, रच दिया नव इतिहास।।

संपत बिनायकिया, भुवनेश्वर

तेरापंथ की तुम तकदीर

तुम धीर, वीर, गंभीर, तेरापंथ की तुम तकदीर।
हे युगप्रधान! जन उद्धारक, हरते हो जन जन की पीर।।

बारह वर्ष की लघु वय में, संयम रत्न धारा।
मुनि सुमेर से दीक्षा लेकर, अपना भाग्य संवारा।।

पंचासवें दीक्षा कल्याणक का, सुअवसर है आया।
तुम जैसा गणमाली पाकर, जन-जन है हर्षाया।।

गढ़े नित नए कीर्तिमान, गण को दी नई पहचान।
पा तुम जैसा सारथी, रथ तेरापंथ का हो रहा गतिमान।।

वैशाख शुक्ला नवमी का दिन, पावन जन्म दिवस तुम्हारा।
रोशन हुआ दुग्गड़ कुल, पा तुम जैसा ध्रुव तारा।।

तिरसठवें जन्म दिवस पर, संघ तुम्हें बधा रहा।
तुम जैसा गणनायक पाकर, भाग्य अपना सराह रहा।।

पंद्रहवां पदाभिषेक तुम्हारा, भावों से करें वर्धापन।
कोड़ दिवाली रहे संघ सरताज, युगों युगों तक पाएं तुम्हारा पथ दर्शन।।

विमला कोठारी, कुर्ला मुंबई

विश्वपति तेरे चरण में

विश्वपति तेरे चरण में, ध्यान मुझको चाहिए।
मैं हूं तेरा भक्त यह, अभिमान मुझको चाहिए।।

कर्ण और जिह्वा तेरी ही, भक्ति में अर्पण करूँ।
दोनों पर बस तेरा ही, गुणगान मुझको चाहिए।।

बेखुदी ऐसी हो जिसमें, भूलूं अपने को भी मैं।
सिर्फ तेरा ही हृदय में, भान मुझको चाहिए।।

शत्रुओं को भी लखूं शुभ, प्रेम-भीनी आँख से।
हर तरफ बस प्रेम का, सामान मुझको चाहिए।।

स्वर्ग के सौंदर्य को, सानन्द ठोकर मार दूं।
वासना-जय की अनोखी, शान मुझको चाहिए।।

देवता दुःख से बचाने को, न आयें मेरे पास।
सत्य-व्रत का पारखी, सम्मान मुझको चाहिए।।

और कुछ वरदान की, इच्छा नहीं बिल्कुल ललित।
धर्म पर मिटने का एक, वरदान मुझको चाहिए।।

ललित राखेचा, गंगाशहर

पावन पुण्य प्रभात

पावन पुण्य प्रभात सुनहरी किरणें लाया है।
दीक्षा कल्याण महोत्सव, नव उल्लास छाया है।
दिव्य चंद्र सा पुत्ररत्न पा, माँ नेमा धन्य हुई है।
सरदारशहर की मिट्टी पदरज पा कृत-पुण्य हुई है।।

देवदूत सा रूप जिनका, मन को हरने वाला है।
जिनका वचनामृत जड़ में नव पुलकन भरने वाला है।
ओजस्वी वक्ता, महातपस्वी, युगसृजक, युगनायक है।
मानवमानस के संयोजक, मानव धर्म प्रवर्तक है।।

सहज सरल सुंदर है मूरत, देख तुम्हें मन वीणा झंकृत।
ऋजुता, मृदुता, सहनशीलता, देखी अद्भुत विनयशीलता।
है महाश्रमण कामकुंभ और कामधेनु, तेरा है व्यक्तित्व निराला,
युग- युग जीओ नेमा नंदन, गण को बाँटो सदा उजाला।।

रचना हिरण, कांदिवली, मुंबई

संबोधि

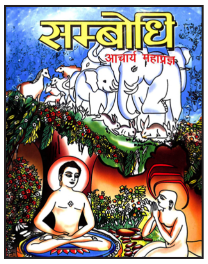

साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

अस्तित्व का बोध असीम है। शब्द ससीम है। ससीम में असीम को बांधने से भ्रम पैदा होता है। इसलिए सभी ने स्वरूप अस्तित्व को अवाच्य कहा है। 'अवाङ्गनसो गोचरम्' वाणी और मन का वह विषय नहीं बनता। 'नेति नेति' यह भी नहीं है, यह भी नहीं है– जो शेष रह जाता है वह 'अस्तित्व' है। 'लाओत्से' ने कहा है जो उसके संबंध में लिखूंगा तो वह झूठ होगा। जो लिखना है वह लिखा नहीं जाएगा। जब चीन के सम्राट ने लिखने को विवश कर दिया, तब यह लिखते हुए प्रारंभ किया कि 'बड़ी भूल हुई जा रही है–'जो कहना है वह कहा नहीं जाता और जो नहीं कहना है वह कहा जाएगा।' मैं जानकर लिखने बैठा हूं, इसलिए जो आगे पढ़ें वे जानकर पढ़ें कि सत्य बोला नहीं जा सकता, कहा नहीं जा सकता और जो कहा जा सकता है वह सत्य नहीं हो सकता।' महावीर ने सत्य को अवक्तव्य कहा है। इसमें भी यही कहा है कि यहां न मन पहुंचता है, न शब्द और न बुद्धि। अस्तित्व का न आकार है, न रूप है, न वह स्त्री, न पुरुष, न नपुंसक है, न जाति है आदि। बुद्ध ने इसके संबंध में प्रश्न करने से भी मना कर दिया कि कोई पूछे ही नहीं। वस्तुतः यह शब्द का विषय नहीं, अनुभूति का है। शब्दों को अनुभूति समझ ली जाए तो यात्रा रुक जाती है। शब्द सिर्फ संकेतवाहक हैं।

२३. ग्रामे वा यदि वाऽरण्ये, न ग्रामे नाप्यरण्यके।
रागद्वेषलयो यत्र, तत्र सिद्धिः प्रजायते ॥

सिद्धि गांव में भी हो सकती है और अरण्य में भी हो सकती है। वह न गांव में हो सकती और न अरण्य में। सिद्धि वहीं होती है, जहां राग और द्वेष का विलय हो जाता है।

साधना का घनिष्ठ संबंध आत्मा से है। इसलिए साधना आत्मा ही है। आत्मा की सिद्धि में बाहरी निमित्तों का खास महत्त्व नहीं है। लेकिन फिर भी वे बनते हैं क्योंकि वे सिद्धि में सहायक हैं। कहीं-कहीं हम साधनों का उल्टा प्रभाव भी देखते हैं। एकांत स्थान जहां आत्म-साधन में सहायक है वहां वह बाधक भी बन जाता है। इसलिए एकांततः हम किसी को भी स्वीकार नहीं कर सकते। साधना के बाहरी निमित्तों पर बल देने की अपेक्षा आंतरिक पक्ष पर बल देना अधिक उपयोगी है।

साधना का आंतरिक पक्ष है– राग-द्वेष पर विजय। जो राग-द्वेष का विजेता है, उसके लिए गांव, नगर, उपवन, नदी, तट आदि सब समान हैं।

केवल बाह्य साधनों से साध्य सिद्ध नहीं होता। इस श्लोक में उन एकांतवासियों का खंडन है, जो यह कहते थे कि साधना जंगल में ही होती है या नगर में ही होती है। भगवान् महावीर ने दोनों का समन्वय कर साधना का क्षेत्र सबके लिए खोल दिया।

२४. न मुण्डितेन श्रमणः, न चोंकारेण ब्राह्मणः।
मुनिर्नारण्यवासेन, कुशचीरैर्न तापसः।।

सिर को मूंडा लेने मात्र से कोई श्रमण नहीं होता, ओंकार को जप लेने मात्र से कोई ब्राह्मण नहीं होता, अरण्य में निवास करने मात्र से कोई मुनि नहीं होता और कुश के बने हुए वस्त्र पहनने मात्र से कोई तापस नहीं होता।

२५. श्रमणः समभावेन, ब्रह्मचर्येण ब्राह्मणः।
ज्ञानेन च मुनिर्लेकि, तपसा तापसो भवेत्॥

श्रमण वह होता है, जो समभाव रखे। ब्राह्मण वह होता है, जो ब्रह्मचर्य का पालन करे। मुनि वह होता है, जो ज्ञान की उपासना करे और तापस वह होता है, जो तपस्या करे।

'बालः पश्यति लिङ्ग, मध्यमबुद्धिर्विचारयति वृत्तम् ।
आगमतत्त्वं तु बुद्धः, परीक्षते सर्वयत्नेन॥'

तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं-

(१) बाल-सामान्यजन, जो विवेक और बुद्धि से परिहीन है वह केवल बाह्य वेष-लिंग को देखता है। उसकी दृष्टि बाह्य आकार-प्रकार से दूर नहीं जाती।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

भय की तमिस्त्रा : अभय का आलोक

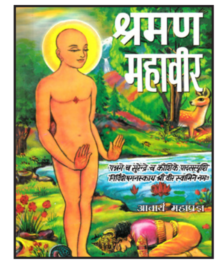

चंडकौशिक भगवान् के पैरों के पास पहुंच गया। उसने सारी शक्ति लगाकर भगवान् के बाएं पैर के अंगूठे को डसा। विष ध्यान की शक्ति से अभिभूत हो गया। विषधर देखता ही रह गया। उसने दूसरी बार पैर को और तीसरी बार पैरों में लिपटकर गले को डसा। उसके सब प्रयत्न विफल हो गए। क्रोध के आवेश में वह खिन्न हो गया। बार-बार के वेग से वह थककर चूर हो गया। वह कुछ दूर जाकर भगवान् के सामने बैठ गया।

भगवान् की ध्यान–प्रतिमा सम्पन्न हुई। उन्होंने देखा चंडकौशिक अपने विशालकाय शरीर को समेटे हुए सामने बैठा है। भगवान् ने प्रशान्त और मैत्री से ओतप्रोत दृष्टि उस पर डाली। उसकी दृष्टि का विष घुल गया। उसके रोम–रोम में शान्ति और सुधा व्याप्त हो गई।

यह है अहिंसा की प्रतिष्ठा और मैत्री की विजय।

ग्वाले महावीर के पीछे-पीछे आ रहे थे। उन्होंने पेड़ पर चढ़कर दूर से सब कुछ देखा। वे आश्चर्य चकित रह गए। उन्होंने दूर-दूर तक यह संवाद पहुंचा दिया कि 'चंडकौशिक' शान्त हो गया है। कनकखल आश्रम का मार्ग अब निरापद है। हर कोई आदमी-इससे आ-जा सकता है। जनता के लिए यह बहुत ही शुभसंवाद था। वह हर्षोत्फुल्ल हो गई। हजारों-हजारों आदमी वहां आए। उन्होंने देखा मंडप के मध्य में एक योगी ध्यानमुद्रा में खड़े हैं और उनके सामने विषधर प्रशान्त मुद्रा में बैठा है। जिसका नाम सुनकर लोग भय से कांपते थे उसी विषधर के पास लोग जा रहे हैं। यह कुछ विचित्र-सा लग रहा है। उन्हें अपनी आखों पर भरोसा नहीं हो रहा है। भगवान् महावीर पन्द्रह दिन तक वहां रहे। उनका यह प्रवास अभय और मैत्री की कसौटी, ध्यानकोष्ठ में बाह्य-प्रभाव-मुक्ति का प्रयोग, अहिंसा की प्रतिष्ठा में क्रूरता का मृदुता में परिवर्तन और जनता के भय का निवारण-इन चार निष्पत्तियों के साथ सम्पन्न हुआ।[1]

३. अभी साधना का दूसरा वर्ष चल रहा है। भगवान् सुरभिपुर से थूणाक सन्निवेश की ओर जा रहे हैं। बीच में हिलोरें लेती हुई गंगा बह रही है। भगवान् उसके तट पर उपस्थित हैं। सिद्धदत्त की नौका यात्रियों को उस पार ले जाने को तैयार खड़ी है। सिद्धदत्त भगवान् से उसमें चढ़ने के लिए आग्रह कर रहा है। भगवान् उसमें आरूढ़ हो गए हैं।

नौका गन्तव्य की दिशा में चल पड़ी। यात्री बातचीत में संलग्न हैं। महावीर अपने ही ध्यान में लीन हैं। नौका नदी के मध्य में पहुंच गई। प्रकृति ने एक नया दृश्य उपस्थित किया। आकाश बादलों से घिर गया। बिजली कौंधने लगी। गर्जारव से सब कुछ ध्वनिमय हो गया। तूफान ने तरंगों को गगनचुम्बी बना दिया। नौका डगमगाने लगी। यात्रियों के हृदय कांप उठे। इस स्थिति में भी महावीर उस नौका के एक कोने में शान्तभाव से बैठे हैं। उनका ध्यान अविचल है मानो उन्हें प्रकृति के इस रौद्र रूप का पता ही नहीं।

भय भय को उत्पन्न करता है, अभय अभय को। सदृश की उत्पत्ति का जैविक सिद्धान्त मनुष्य की मानसिक वृत्तियों पर भी घटित होता है। महावीर के अभय ने प्रकृति की रुद्रता से भयभीत यात्रियों में अभय का संचार कर दिया। वे उनकी अभयमुद्रा को देख शान्त हो गए। प्रकृति का आवेग भी शान्त हो गया। नौका ने यात्रियों को तट पर पहुंचा दिया। महावीर मृत्यु-भय की महानदी को पार कर अभय के तट पर पहुंच गए।

आदिवासियों के बीच

कस्तूरी घिसने को सहन नहीं करती, घर्षण से उसका परिमल प्रस्फुट नहीं होता। अगरबत्ती अपनी सुरभि से सारे वायुमण्डल को सुरभित नहीं कर पाती, यदि अग्निस्नान उसे मान्य नहीं होता। अग्निताप को सहकर सोना चमक उठता है। यह हमारी दुनिया ताप और संघर्ष की दुनिया है। इसमें वही व्यक्तित्व चमकता है, जो ताप और संघर्ष को सहता है।

भगवान् अपनी चेतना में निखार लाने के लिए कृतसंकल्प हैं। ताप और संघर्ष अनुचर की भांति उनके साथ-साथ चल रहे हैं।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

कायसिद्धि का प्रयोग

कायक्लेश क्यों?

शरीर के साथ हमारी दुश्मनी नहीं है जिससे द्वेष भाव से उसे उत्पीड़ित किया जाए। प्राणी का अपने शरीर के प्रति बहुत राग होता है। वह किञ्चित् भी कष्ट झेलना नहीं चाहता, यह शरीरासक्ति प्रगाढ़ होती जाती है। फलस्वरूप शारीरिक सहिष्णुता की शक्ति कमजोर हो जाती है। कायक्लेश तप का उद्देश्य है– देह-दुःख-तितिक्षा– शरीर में उत्पन्न कष्टों को सहन करने की शक्ति का विकास। इसका दूसरा उद्देश्य है सुखासक्ति का त्याग। व्यक्ति की भौतिक सुखों में आसक्ति होती है, वह आत्मिक सुखों की उपलब्धि में बहुत बड़ी बाधा है। एक साधु के लिए तो और भी ज्यादा आवश्यक है कि वह सुखासक्ति का त्याग करे, सुविधावादी मनोवृत्ति को छोड़े। जो साधु इस मनोवृत्ति का परित्याग नहीं करता है उसकी जो स्थिति बनती है, दशवैकालिक सूत्र की व्याख्या में उसका सुन्दर चित्रण किया गया है। वह इस प्रकार है-

एक वृद्ध पुरुष पुत्रसहित प्रवर्जित हुआ। चेला वृद्ध साधु को अतीव प्रिय था। एक बार दुःख प्रकट करते हुए वह कहने लगा– 'बिना जूते के चला नहीं जाता' अनुकम्पावश वृद्ध ने उसे जूतों की छूट दी। तब चेला बोला 'ऊपर का तला ठण्ड से फटता है!' वृद्ध ने मोजे करा दिए। तब कहने लगा– 'सिर अत्यन्त जलने लगता है।' वृद्ध ने सिर ढकने के वस्त्र की आज्ञा दी। तब बोला 'भिक्षा के लिए नहीं घूमा जाता।' वृद्ध ने वहीं उसे भोजन लाकर देना शुरू कर दिया। फिर बोला– 'भूमि पर नहीं सोया जाता!' वृद्ध ने बिछौने की आज्ञा दी। फिर बोला 'लोच करना नहीं बनता।' वृद्ध ने क्षुर को काम में लेने की आज्ञा दी। काल बीतने पर युवा साधु बोला– 'मैं बिना स्त्री के नहीं रह सकता' वृद्ध ने यह जानकर कि यह शठ है और अयोग्य है, उसे अपने आश्रम से दूर कर दिया।

कायक्लेश तप के अभाव में यह स्थिति बनती है। इसका तीसरा उद्देश्य है– शरीर-सिद्धि। शरीर को साधना के अनुकूल बनाना।

दशवैकालिक सूत्र के तीसरे अध्ययन का श्लोक कायक्लेश तप की दृष्टि से मननीय है–

आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अबाउडा।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया।।

संयत और सुसमाहित मुनि गर्मी में आतापना लेते हैं, सर्दी में अनावृत शरीर रहकर ठंड को सहते हैं, वर्षा ऋतु में प्रतिसंलीन– गुप्त होकर रहते हैं।

कायक्लेश तप के अनेक प्रकार हैं-

१. **स्थान–** खड़े-खड़े कायोत्सर्ग, ध्यान आदि करना।

२. **आसन–** वीरासन, उत्कटुकासन, वज्रासन, पद्मासन आदि आसनों का अभ्यास करना। स्थिरतापूर्वक लम्बे समय तक एक आसनममुद्रा में रहना।

३. **शयन–** एक पार्श्व में लेटकर कायोत्सर्ग करना। अधोमुख, उत्तानमुख लेटकर कायोत्सर्ग करना। एक ही मुद्रा में स्थिरतापूर्वक लेटे रहकर कायोत्सर्ग करना।

४. **आतापना–** ऊर्ध्वबाहु होकर खड़े-खड़े या बैठे-बैठे सूर्य के सामने स्थिर होकर आतापना लेना।

५. **अप्रावरण–** शीतकाल में निर्वस्त्र रहकर अथवा अल्पवस्त्र रखकर सर्दी सहन करना।

६. **शरीर-परिकर्म-परित्याग–** मर्दन, स्नान, विभूषा आदि का वर्जन करना, शरीर की साज-सज्जा न करना। शरीर में उत्पन्न कष्ट को सहन करना, चिकित्सा का वर्जन करना।

इस तरह कायक्लेश के विभिन्न प्रकार हैं। इस तप के द्वारा कायसिद्धि प्राप्त करना साधक का लक्ष्य होना चाहिए।

कायक्लेश का लाभ

खुहं पिवासं दुस्सेज्जं सीउण्हं अरई भयं।
अहियासे अव्वहिओ देहे दुक्खं महाफलं।।

साधक भूख, प्यास, दुःशय्या (विषमभूमि पर सोना) शीत, उष्ण, अरति और भय को प्रसन्न मन से सहन करे, क्योंकि देह में उत्पन्न कष्ट को सहन करना (निर्जरा अथवा मोक्ष) का हेतु होता है। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनिश्री मोड़जी (चंदेरा) दीक्षा क्रमांक : 87

मुनिश्री बड़े घोर तपस्वी हुए (ख्यात में काकड़ाभूत लिखा है।) 'तपः सूर अणगार' की सूक्ति को सार्थक करते हुए इस प्रकार तप के मैदान में आए कि मानों कोई. बलिदानी योद्धा रणस्थल में डटकर खड़ा हो। मुनिश्री ने उपवास, बेले, तेले, चोले अनेक बार किए। इससे ऊपर के आंकड़े इस प्रकार है– 5/2, 6/1, 8/1, 11/3, 18/1, 30/1, 31/1, 32/2, 33/1, 46/1, 47/1, 57/1, 63/1, 64/1, 66/1, 72/1, 75/2, 76/1, 86/1, 90/1, 91/1, 92/2, 93/1, 107/1, 108/1, 181/1, 185/1। मुनिश्री ने शीतकाल में शीत और उष्णकाल में उष्ण परिषह बहुत सहन किया।

– साभार: शासन समुद्र –

मई 2024
सप्ताह के विशेष दिन

29 मई
भगवान श्रेयांस नाथ च्यवन कल्याणक

31 मई
भगवान मुनिसुव्रत जन्म कल्याणक

01 जून
भगवान मुनिसुव्रत निर्वाण कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज़ पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

विद्या, विनय और विवेक के समवाय हैं आचार्यश्री महाश्रमण

कांदीवली।

तेरापंथ भवन कांदीवली के विशाल प्रांगण में महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी का दीक्षा कल्याण महोत्सव का भव्य कार्यक्रम उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी, 'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी, साध्वी शकुंतलाकुमारी जी, साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में मनाया गया।

इस अवसर पर अपने आराध्य के प्रति शुभकामना व्यक्त करते हुए ओजस्वी वाणी में मुनि कमलकुमारजी ने कहा- आचार्य श्री महाश्रमणजी का व्यक्तित्व विराट और विशाल है। उनके आभामंडल में रहने से और मुखमुद्रा के दर्शन मात्र से सारी थकान दूर हो जाती है। उनके जीवन में विद्या, विनय, विवेक का सुंदर संगम है। भैक्षव शासन को सौभाग्य है कि श्री वृद्धि करने वाले आचार्य मिले हैं। आपने कहा कि कल्याण महोत्सव के शुभ मौके पर संकल्प करें कि हमारा हर कदम उनके इशारों पर, उनके विचारों पर, उनके शब्दों पर, उनके आदेशों पर चले।

आचार्यश्री जी की अभ्यर्थना में कविता प्रस्तुत करते हुए मुनिश्री ने कहा- आज का दिवस अति महत्वपूर्ण है क्योंकि आचार्य श्री का दीक्षा महोत्सव और प्रमुखाश्रीजी का चयन एक ही दिन है।

'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी की सहवर्ती साध्वियों ने गीत का संगान किया। साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा - आचार्यश्री महाश्रमणजी गुणों के भंडार हैं। गुरुदेव के कल्याण महोत्सव की सार्थकता तभी होगी जब हम तप और त्याग की भेंट चढ़ायेंगे। साध्वी शकुंतलाकुमारीजी ने कहा – आचार्य श्री महाश्रमणजी करूणा सागर हैं। साध्वी सोमलताजी के जीवन प्रसंग की घटना का उल्लेख करते हुए कहा- गुरु हो तो महाश्रमणजी जैसे हो। डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा - आचार्यश्री महाश्रमण जी अनगिन गुणों के पर्याय हैं। आपने आठ सम्पदाओं में से दो सम्पदा का विवेचन करते हुए आचार्य प्रवर की आचार निष्ठा और संयम निष्ठा को बेजोड़ बताया। साध्वी संचितयशा जी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी मृदुयशाजी ने महाश्रमण महा लैब कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

मुनि अमन कुमारजी, मुनि मुकेश कुमारजी ने गुरु भक्ति के संस्मरण सुनाते हुए मधुर स्वर लहरियों से गुरुदेव की अर्चना की। मुनि नमिकुमारजी ने अपने जीवन के रोमांचकारी संस्मरणों को सुनाते हुए कहा - मेरे मस्तक पर मेरे संयमप्रदाता, सरलमना गुरुदेव का व उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी का वरद हस्त है। मैं तप के क्षेत्र में आगे बढ़ूं। गुरुदेव को 50वें दीक्षा महोत्सव पर भेंट देते हुए नौ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

साध्वी प्रेरणाश्रीजी ने मुक्तक के द्वारा, साध्वी जागृतप्रभाजी व साध्वी मृदुयशाजी ने कविता के माध्यम से एवं साध्वी रक्षितयशाजी ने गीत के माध्यम से अपनी भावभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ रेणू कोठारी के मंगल गीत से हुआ। अनेकों श्रावक-श्राविकाओं ने तप-त्याग में अपनी सहभागिता दर्ज की। ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत की सुन्दर प्रस्तुति दी।

मुंबई सभा से नवरतन गन्ना ने स्वागत वक्तव्य दिया। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के मंत्री प्यारचंद मेहता, मुम्बई तेरापंथ सभा के मंत्री दीपक डागलिया, कांदीवली तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष नवनीत कच्छारा ने पूज्यप्रवर को अभ्यर्थना की। संघ संगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अध्यात्म के शिखर पुरुष हैं आचार्यश्री महाश्रमण

जयपुर।

आचार्यश्री महाश्रमणजी का व्यक्तित्व अपार आध्यात्मिक संपदाओं से सुशोभित है। आपकी अप्रमत्त चेतना व पापभीरुता अनुकरणीय है, श्रमशीलता श्रेष्ठ है, संघ संचालन क्षमता अद्भुत है, संकल्पनिष्ठा बेजोड़ है, समता अडिग है, प्राण ऊर्जा व आभामंडल परम पवित्र है। आपके विराट व्यक्तित्व के सामने कल्पवृक्ष, चिंतामणि रत्न व कामधेनु भी बौने प्रतीत होते हैं।

उक्त विचार 'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी ने अणुविभा केन्द्र के महाप्रज्ञ सभागार में आचार्य श्री महाश्रमणजी के 63वें जन्मोत्सव, 15वें आचार्य पदाभिषेक महोत्सव एवं दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष में व्यक्त किए। साध्वीश्री ने आगे कहा- यह वैशाख का महीना तेरापंथ धर्मसंघ के लिए उपहार स्वरूप है।

धर्मसंघ की अत्यंत पुण्याई का उदय है कि ऐसे सिद्धपुरुष व महान लब्धिधर आचार्य हमें प्राप्त हैं जो पूर्व दसों आचार्यों की विशिष्ट शक्तियों से संपन्न हैं । सर्वप्रथम महाश्रमण अष्टकम् का संगान साध्वी समितिप्रभाजी व निष्ठा मरलेचा ने किया। साध्वीवृंद ने समवेत स्वरों में गीत का संगान किया। साध्वी मधुलेखाजी ने श्रद्धासिक्त भाव सुमन अर्पित किए। युवा दिवस के उपलक्ष्य में युवक परिषद् व संदीप भण्डारी ने भावपूर्ण गीतिका द्वारा प्रस्तुति दी।

कन्या मंडल व महिला मंडल ने एक्शन व प्रोप्स के साथ सुमधुर गीत का संगान किया। सभा अध्यक्ष हिम्मत डोसी, अणुविभा केन्द्र अध्यक्ष पन्नालाल बैद, नरेश मेहता, युवकरत्न राजेन्द्र सठिया, शांतिलाल गोलछा, नीरु मेहता आदि ने आस्थासिक्त विचार प्रस्तुत किए।

तेयुप अध्यक्ष अमित छल्लाणी ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी संस्कृतिप्रभाजी ने किया।

चार दिवसीय प्रवास में बही अध्यात्म की गंगा

जयगांव। समणी डॉ मंजूप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी का जयगांव में चार दिवसीय प्रवास रहा। समणी जी ने भक्तामर स्त्रोत्र, विघ्नहरण की ढाल, मुणिन्द मोरा की ढाल आदि का सामूहिक संगान करवाया। समणी जी ने बताया कि ये स्तोत्र और ढालें चामत्कारिक हैं। इनके संगान से मंत्रित पानी का उपयोग कर हम अनेकों बीमारियों से निजात पा सकते हैं, स्वस्थ रह सकते हैं। समणी जी ने इन रचनाओं के घटना प्रसंग भी सुनाए और इन सबसे संबंधित अनेक जानकारियां दीं। इस छोटे से प्रवास में समणी जी ने अनेक सारगर्भित जानकारियां दी। श्रावक-श्राविकाओं ने समणी जी के प्रवास का पूरा-पूरा लाभ लिया।

महान संयम के आराधक आचार्य महाश्रमणजी

मॉडल टॉउन, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्रीजी एवं श्रमणसंघीय प्रवर्तक राजेन्द्र मुनिजी के सान्निध्य में दिल्ली सभा एवं उत्तर-मध्य सभा के तत्त्वावधान में अग्रवाल धर्मशाला में पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी का दीक्षा कल्याण महोत्सव का भव्य कार्यक्रम समायोजित हुआ। राजेन्द्र मुनिजी ने अपने वक्तव्य में कहा - आज महान जैनाचार्य आचार्य श्री महाश्रमणजी का दीक्षा दिवस है। संयम पर्याय के पचास बसंत पूरे हो चुके हैं। पूरे धर्मसंघ में हर्षोल्लास है। संयम सुख का राजमार्ग है, संयम आनंद का उपवन है।

संयमी आत्मा ही जीवन में शांति के शतदल खिला सकती है। महान संयम की आराधना करने वाले पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का अभिनंदन। मुझे भी उनके दर्शनों का सौभाग्य मिला है। ऐसे महायशस्वी, महातपस्वी आचार्य महाश्रमणजी दुनिया को संयम का आलोक बांटते रहें।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने श्रद्धा अर्ध्य समर्पित करते हुए कहा अनुत्तर संयम के अनुत्तर महासाधक आचार्य महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण उत्सव पर हम उनकी अभ्यर्थना अर्चना कर रहे हैं।

दस आचार्यों की अतिशय पुण्याई का भोग करते हुए वे अपनी तेजस्वी साधना के द्वारा अपनी पुण्याई को शतगुणित कर रहे हैं। आचार्य महाश्रमणजी आत्मद्रष्टा, युगनायक, युगपुरुष हैं।

उन्होंने आगम रुपी महासागर से ज्ञान रूपी मोतियों को बटोरकर न केवल अपने जीवन को आभामंडित किया है बल्कि धर्मसंघ को भी आभामंडित कर रहे हैं। संयम की अर्धशती के सुहाने सफर की संपन्नता पर हम यही मंगलकामना करते हैं कि सम्पूर्ण धर्मसंघ आपके संयम की शताब्दी मनाएं।

साध्वीश्री ने कहा- आज हमने इस दीक्षा-कल्याण उत्सव पर लगभग सात सौ एकासन एवं एकावन तेले तथा एक चोला करवाकर पूज्यप्रवर की तप के द्वारा अभिवंदना की है। दिल्ली श्रावक समाज ने तपांजलि समर्पित की है।

पूज्यपवर के दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष पर श्रावक समाज ने एक वर्ष में 'ऊँ श्री महाश्रमण गुरवे नमः' का तेरह करोड़ का जप कर जपांजलि समर्पित की है।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा - धरती पर जब श्रमणत्व को प्रकट होने की इच्छा हुई तो वो महाश्रमण के रूप में प्रकट हुआ। आचार्य महाश्रमण सिर्फ श्रमण नहीं अपनी साधना के तेज से महाश्रमण बने है। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा - आचार्य महाश्रमणजी ज्ञान के दिवाकर, शांति के सुधाकर, जय-विजयी गुणाकर हैं, इस पंचम कलिकाल में महावीर सम तीर्थंकर हैं। साध्वी समत्वयशाजी ने स्वरचित गीत के द्वारा अभ्यर्थना की।

सभा, तेयुप व महिला मंडल के लगभग इक्कावन भाई-बहनों ने साध्वी अणिमाश्रीजी द्वारा रचित गीत का विशिष्ट एवं मनमोहक शैली में संगान किया।

दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, उत्तर मध्य सभाध्यक्ष प्रसन्न पुगलिया, दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, अणुव्रत वि.भा. के मुख्य न्यासी टी.के.जैन, उत्तरी दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष मधु सेठिया, एस.एस. जैन महासभा के महामंत्री शीलचंद जैन, विमल भंसाली, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं एवं बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी।

आभार ज्ञापन सभा मंत्री पवन डोसी ने किया।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर विशेष

चयन ये मंगलकारी है

● साध्वी भव्ययशा ●

नवमी साध्वी प्रमुखा का चयन ये मंगलकारी है।
निज दीक्षोत्सव पर विभुवर का निर्णय गण हितकारी है।
गण हित का अभिनंदन, प्रभु पथ का अभिनंदन।।

शासन माता को हर पल चित्त समाधि पंहुचाई।
गणहित अभिनव चिन्तन से प्रकट हुई है पुण्याई।
महाप्रज्ञ की प्रज्ञा का सिंचन ये, वरदाई है।
प्रज्ञा का अभिनन्दन, आस्था का अभिनन्दन।।

रोम-रोम में करुणा का अविरल झरना बहता है।
कोमल अनुशासन शैली, सबका मन यह कहता है।
सुघड़ व्यवस्था कौशल में सरदारसती सहचारी है।
करुणा का अभिवंदन, अनुशासन को वन्दन।।

जब-जब जिसने जो मांगा समयोचित वह पूर्ण किया।
नन्ही-नन्ही कलियों को स्नेह सालिल अनुपान दिया।
चिंतन की स्फुरणा शोभन, मंथन मति मनहारी है।
चिन्तन का अभिनन्दन, मंथन को है वंदन।।

आचारनिष्ठता ही झलकी, जब-जब भी देखा तुमको।
"नियम निष्ठ मैं बनी रहूं" आशीर्वाद मिला मुझको।
"आए ना शैथिल्य कहीं" शिक्षा भवमय हारी है।
निष्ठा का अभिनन्दन, जागृति को है वंदन।।

लय - तुम दल की धड़कन में

मंगलमय घड़ियां आई

● साध्वी त्रिशलाकुमारी ●

ओ आयो गण प्रांगण में उत्सव, मंगलमय घड़ियां आई।
ओ आयो चयन दिवस शुभ अवसर, कण-कण में खुशियां छाई।।

तुलसी महाप्रज्ञ की कृति, गुरुवर मोल बढ़ायो सा।
देकर प्रमुखा पद गौरवमय, थांरो विरुद बढ़ाया सा।।

विनय समर्पण सहज सरलता, गुरुनिष्ठ बेजोड़ सा।
अद्भुत अनुपम कार्यकुशलता, तप में रुचि विशेष सा।।

वर्धापन की मंगल बेला, शुभ संकल्प सझावां सा।
नूतन रंग भरां सपना में, गण कीरत फैलावां सा।।

करां कामना रहो निरामय, संजम साथ दिखावो सा।
साध्वी परिकर बढ़े प्रगति पथ, शक्तिपात करावो सा।।

लय - ओ बन्नी थांरो चांद

महक उठा मधुवन

● साध्वी काम्यप्रभा ●

मनोनयन का मंगल अवसर, महक उठा मधुवन,
साध्वीप्रमुखा चयन तुम्हारा, प्रमुदित श्रमणी गण।
सजाते भावों का गुलशन, सभी मिल करते वर्धापन।।

ममतामयी छवि प्यारी, तुमसे जुड़ जाती इकतारी,
मिले प्रेरणा प्रोत्साहन, सन्निधि लगती मनहारी,
जपाराधना, आत्मसाधना, त्याग तपोबल वरदायी,
ध्रुवयोगों में सतत सजगता, अप्रमत्तता फलदायी,
जीवन का हर पल ऊर्जस्वल, आकर्षक है आभामंडल,
गुरुत्रयी की कृपा निराली, पाया नम्बर वन।।

संयम की सौरभ से सुरभित, अमल धवल आचार है,
निर्मल निर्झर सम उज्जवलतर, मधुर-मधुर व्यवहार है,
ज्ञानाराधना चले निरन्तर, वर स्वाध्याय सुधारस पान,
चिंतन, मंथन और प्रशिक्षण, करते आगम अनुसंधान,
आरोग्य वरो शुभ श्रेयस्कर, यशगाथा गूंजे मुख-मुख पर,
शीतल छांव तले हम करते जाएं आरोहण।।

लय – लाल दुपट्टा उड़ गया रे

पहनाया नव सेहरा है

● साध्वी अणिमाश्री ●
● साध्वी सुधाप्रभा ●

तेरापंथ के भव्य भाल पर, प्रभु ने चित्र उकेरा है।
साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा को, पहनाया नव सेहरा है।।

वैशाखी चवदस को प्रभु ने, नव इतिहास रचाया है।
अपने दीक्षा दिन पर तुमको, प्रमुखा पद बक्साया है।
श्रमणी गण सिरमौर बनी तुम, आया नया सवेरा है।।

खुशियों की रिमझिम बारिश नित, होती रहती गणवन में।
तेरा स्नेहिल साया पा, मंदार खिला गण प्रांगण में।
ममतामयी मां! तुम को पाकर, प्रफुल्लित मानस मेरा है।।

श्रद्धा के फूलों की लड़ियां, लो स्वीकारो महासतीवर।
नव निर्माण करो नव युग का, कर में आया है अवसर।
दीप और ज्योति सा रिश्ता, तेरा मेरा गहरा है।।

जीओ साल हजारों माते ! करे कामना हम मिलकर।
प्रभु कृपा की दौलत का, तुम पाना हर पल अभिनव वर।
गण कल्याणी! चिन्ताचूर्णी! सबल सहारा तेरा है।।

लय: कलियुग बैठा

चयन दिवस शुभ आया

● साध्वी संघप्रभा ●

चयन दिवस शुभ आया।
साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा नाम जन-जन के मन भाया।
प्रभु के दीक्षा दिन सह तेरा मनोनयन दिन आया।।

शहर लाडनूं मोदी परिकर जन्म हुआ सुखकारी।
नाम सरोज दिया बाला का संस्कारी मनहारी।
लघु वय में वैराग्य जगा, संयम हित मन उमगाया।।

पारमार्थिक-शिक्षण-संस्था में किया अध्ययन गहरा।
हुई विलक्षण समणी दीक्षा नव इतिहास सुनहरा।
आठ वर्ष तक नियोजिका बन, निज कर्तृत्व दिखाया।।

तुलसी युग श्रेणी आरोहण साध्वी दीक्षा पाई।
मिली निकटतम सेवा महाप्रज्ञ की महर सवाई।
महाश्रमण ने मूल्यांकन कर, प्रमुखा पद बक्साया।।

अथ से इति तक हर स्थिति के सांचे में तुमको ढ़ाला।
मात-तात बन महाप्रज्ञ ने संतति सम संभाला।
गुरु ऊर्जा सम्प्रेषण से, तुमने जीवन चमकाया।।

'शासनमाता' महाश्रमणी सन्निधि में अनुभव पाए।
कसौटियों में खरे उतर कर आगे कदम बढ़ाए।
साध्वी प्रमुखा नवमासन का, तुमने सुयश बढ़ाया।।

विनय और वात्सल्य अनूठा प्रवर शासना कौशल।
चित्त समाधि पूर्ण व्यवस्था, जागरूकता पल-पल।
प्रखर प्रभावक प्रवचनशैली, लेखन सुघड़ सुहाया।।

अप्रमत्त स्वाध्यायशील, अध्यात्मनिष्ठ गुणग्राही।
मृदु व्यवहारी आत्म विहारी, श्रुतसागर अवगाही।
पा तुम जैसी साध्वी प्रमुखा, जागा भाग्य सवाया।।

लय - संयम मय जीवन हो

समणी गण में शोभे

● साध्वी संगीतप्रभा ●

आई भोर रुपाली है, गणवन में दीवाली है।
समणी गण में शोभे ज्यूं मानो हीरकणी।।

मोदी कुल री लाल लाडली, मोत्यां बिचली लाल है,
तुलसी कर स्यूं संयम पाकर जीवन ओ खुशहाल है।
दिन-दिन प्रतिभा है निखरी, "सविता" री आभा बिखरी,
संयम-क्षमता री सौरभ फैली घणी रै घणी।।

सौम्य सुधा बसै हिरदे में, समतारस वरसावणी,
सहज-सरल अनुशासन शैली सगलां रे मनभावणी।
अन्तर में ही रमण करै, कर्तव्यां ने नहीं बिसरे,
आध्यात्मिक वैज्ञानिक जीवन री शान बणी।।

महाप्रज्ञ री सन्निधि में प्रक्षा रस रो जो पान कियो,
विनय, समर्पण, सहनशीलता, स्यूं उणने अनुपान दियो।
गुरुवां रै मन भाई है, किरपा मिली सवाई है,
गुरु महाश्रमण शासण में अभिनव ख्यात बणी।।

लय - मेंहदी रची म्हारै

'महाश्रणोस्तु' 'मंगलम' कार्यशाला का आयोजन

रिसडा। महिला मंडल ने मुनि जिनेशकुमार जी के सानिध्य में 'महाश्रणोस्तु' 'मंगलम' कार्यशाला का आयोजन उत्तर हावड़ा में किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि जिनेशकुमार जी के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। मंगलाचरण में क्षेत्र की सभी बहनों ने भाग लिया। मुनि कुणालकुमार जी द्वारा एक गीतिका का संगान किया गया। मुनि जिनेशकुमार जी ने अपने प्रेरणा पाथ्य में कहा कि हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमें पंचम आड़े में आचार्य भिक्षु की यशस्वी परंपरा में आचार्यश्री महाश्रमणजी का पावन सानिध्य प्राप्त हो रहा है। मुनिश्री ने आचार्यश्री महाश्रमणजी के अनेक गुणों के बारे में बताया। मुनि जिनेशकुमार जी ने आचार्य के आठ ध्येय गुणों का विवेचन भी किया। मुनि परमानंद जी द्वारा एक क्वीज प्रतियोगिता भी करवाई गई। जिसमें 12 ग्रुप बनाए गए। रिसडा महिला मंडल की पांच बहनों ने कार्यशाला में भाग लिया।

अक्षय तृतीया दिवस पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

सरदारशहर

तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' मुनि विजयकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित अक्षय तृतीया कार्यक्रम में मुनिश्री ने कहा कि तिथियां आती हैं और चली जाती हैं। पर वैशाख के शुक्ल पक्ष की तीज के पीछे भी एक विशेष इतिहास जुड़ा हुआ है। इस दिन भगवान् ऋषभ ने दान की एक नई परम्परा की शुरुआत की थी उस परम्परा का कभी क्षय नहीं हुआ, इसलिए वह तिथि अक्षय बन गई। ऋषभ ने अपने जीवन के 83 भाग गृहस्थ जीवन में बिताये, कर्म शास्त्र का लोगों को प्रशिक्षण दिया। जीवन के 84 वें भाग में उन्होंने धर्मयुग का प्रवर्तन किया। अपने सम्पूर्ण राज्य की व्यवस्था करके उन्होंने संयम जीवन स्वीकार किया। विचरण करते हुए वे हस्तिनापुर नगर पधारे। नगर के राज मार्ग पर वे भिक्षा के लिए घूम रहे थे। ऋषभ को देखकर प्रपौत्र श्रेयांसकुमार को जाति स्मरण ज्ञान हुआ और उसने भिक्षा के लिए निवेदन किया। श्रेयांसकुमार इक्षुरस का दान देकर कृतकृत्य हो गया। बाबा ऋषभ ने पहली बार अपने तप का पारणा किया। वह वैशाख शुक्ला तीज का दिन था, विशुद्ध दान की परम्परा की उस दिन से शुरुआत हुई थी। इस दिन की महत्ता को ध्यान में रखकर हजारों-हजारों व्यक्ति वर्षीतप की आराधना करते हैं, अपने हाथ से गुरुओं को पात्र दान देकर पारणा करते हैं। मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के बाद महिला मण्डल की बहनों ने मंगल गीत प्रस्तुत किया। मुनिश्री ने वर्षीतप के उपलक्ष्य में गीत का संगान किया। सरदारशहर में सातवें वर्षीतप के साथ मुनि रमणीयकुमारजी एवं 6 श्रावक-श्राविकाओं के वर्षीतप के पारणे हुए।

शिवमोग्गा, कर्नाटक

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीतकुमार जी के सान्निध्य में पारणोत्सव का शुभारंभ महामंत्रोच्चार के पश्चात् 'ऊं ऋषभाय नमः' के जप से हुआ। इस अवसर पर मुनि मोहजीतकुमार जी ने भगवान ऋषभ के द्वारा प्रारम्भ की गई। विकास परम्परा एवं वर्षीतप के महत्व पर प्रकाश डाला। अपने द्वितीय वर्षीतप की सम्पूर्ति कर रहे मुनि भव्यकुमार जी ने भगवान् ऋषभ एवं श्रेयांसकुमार से जुड़े प्रसंगों के साथ अपने वर्षीतप के अनुभव साझा किये।

मुनि जयेश कुमार जी ने भगवान आदिनाथ के व्यक्तित्व के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला एवं वर्षीतप कर्ताओं के अनुमोदन में मधुर स्वर प्रकट किए। कार्यक्रम में मुनि भव्यकुमार जी के संसारपक्षीय माता पिता के साथ नजदीकी क्षेत्रों से 5 वर्षीतप तपस्वियों की उपस्थिति रही। शिवमोग्गा सभाध्यक्ष चन्दनमल भटेवरा ने तपस्वियों एवं आगंतुक जनों का स्वागत किया। वर्षीतप तपस्वियों के पारिवारिक जन एवं मलनाड़ क्षेत्र से समागत अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपने अनुमोदना स्वर प्रकट किये। आभार सभा मंत्री उत्तमचंद बरलोटा ने किया। कार्यक्रम का संचालन चन्द्रप्रकाश छाजेड़ ने किया।

सुजानगढ़

शासनश्री साध्वी सुप्रभा जी के सानिध्य में तेरापंथ सभा भवन में अक्षय तृतीया कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। तत्पश्चात राजकुमारी भूतोड़िया और ललिता दुगड़ ने गीतिका के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी संघप्रभा जी ने भगवान ऋषभ देव के जीवन वृत्त का विवरण कहानी के माध्यम से व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन मंगल पाठ द्वारा किया गया।

लाडनूं

जैन विश्व भारती, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ महिला मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में महाश्रमण विहार, जैन विश्व भारती में मुनि रणजीतकुमार जी एवं मुनि जयकुमार जी के पावन सान्निध्य में अक्षय तृतीया का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुनि रणजीतकुमार जी के मंगल मंत्रोच्चार के साथ हुआ। तत्पश्चात् श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के मंत्री महेन्द्र बाफना ने मुनि जयकुमार जी के वर्षीतप की अनुमोदना की। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल की ओर से रेणु कोचर एवं मीनाक्षी चोरड़िया ने गीतिका के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी, ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भी अपनी प्रस्तुति दी गई। जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति प्रो.बी.आर.दूगड़ ने जैन धर्म में वर्णित तपस्या की महत्ता को बताया। तपस्विनी बहनों को सभा की ओर से महेन्द्र बाफना, मन्नालाल बैद एवं राजेन्द्र खटेड़ द्वारा अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। मुनि जयकुमार जी ने दान की परम्परा को विस्तारपूर्वक समझाया गया। मुनि रणजीतकुमार जी ने मुनि जयकुमार जी की तपस्या की अनुमोदना करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। मुनि तन्मयकुमार जी एवं मुनि कौशलकुमार जी ने गीतिका के माध्यम से भावाभिव्यक्ति प्रदान की। मुनि मुदितकुमार जी ने तपस्या के संदर्भ में अपने अनुभवों को मुनि जयकुमार जी के साथ अनुभूत संस्मरण को साझा किया। तपस्विनी बहनों के पारिवारिक जन ने अपने विचार व्यक्त किये। अनुमोदना के इस अवसर पर लाडनूं नगर के सैंकड़ों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत राजश्री कोचर ने किया तथा कार्यक्रम के अंत में राजकुमार चोरड़िया ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया।

डेगाना

शहर के जैन भवन में साध्वी कमलप्रभा जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया समारोह का आयोजन किया गया। साध्वी कमलप्रभाजी ने कहा कि यह पर्व परशुराम का जन्म दिन, गंगा का धरती पर अवतरण, महाभारत लिखने की शुरुआत आदि कई मान्यताओं के साथ जुड़ा हुआ है। किन्तु जैन परम्परा में इसका संबंध भगवान ऋषभ के साथ जुड़ा हुआ है। आज के दिन भगवान ने 12 माह 39 दिन की तपस्या का पारणा अपने प्रपोत्र श्रेयांस के हाथों से किया था। इस अवसर पर बोरावड़ एवं छोटी खाटू से तीन वर्षीतप तपस्वी उपस्थित थे। साध्वी आरोग्ययशाजी के भी आठवां वर्षीतप चल रहा है। विजया देवी बाफना, मोहन सुराणा, छोटी खाटू, बोरावड़ और डेगाना महिला मंडल एवं साध्वीवृंद ने सुमधुर गीतों के द्वारा सभी तपस्वियों की अनुमोदना की। साध्वी आरोग्ययशा, रायचंद बोथरा, कपूरचंद बैद, गजेन्द्र बोथरा, रिखबचन्द भण्डारी, किरण देवी, ताराचंद कोठारी आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों ने रोचक प्रस्तुति के द्वारा अक्षय तृतीया के इतिहास से अवगत कराया। कार्यक्रम का मंगलाचरण कन्या मंडल, अतिथियों का स्वागत विमल कोठारी व आभार ज्ञापन प्रवीण चोरड़िया ने किया। तपस्विनी साध्वी के सम्मान में अनेक लोगों ने त्याग व नियम ग्रहण किये। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, डेगाना की ओर से तपस्वी भाई-बहनों का साहित्य भेंट के द्वारा स्वागत किया गया। इस अवसर पर आसपास के क्षेत्रों के लोग उपस्थित थे।

सिरियारी

आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती मुनि मणिलाल जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव का कार्यक्रम भिक्षु समाधि स्थल सिरियारी के भिक्षु आराध्यम् में किया गया। इस अवसर पर 'शासनश्री' मुनि मुनिव्रतकुमार जी, मुनि धर्मेशकुमारजी, मुनि चैतन्यकुमारजी, मुनि गिरिशकुमार जी, मुनि प्रतीककुमार जी आदि संतों ने गीत एवं वक्तव्य आदि के माध्यम से इतिहास से जुड़े तथ्यों को उजागर करते हुए अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम में 15 भाई-बहनों ने मुनिवृंद को इक्षुरस का दान देकर अपने वर्षीतप का क्रम संपन्न किया। नमस्कार महामंत्र के साथ शुरू हुए कार्यक्रम में सर्वप्रथम 'ॐ ऋषभाय नमः' मंत्र का सामूहिक जप किया गया। तत्पश्चात् सिरियारी संस्थान के अध्यक्ष निर्मल श्रीमाल ने सभी तपस्वी भाई-बहनों का स्वागत अभिनंदन करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। उपाध्यक्ष उतमचद सुखलेचा, पीयूष गोगड़, सहमंत्री मनीष रांका, कार्यकारिणी सदस्य, विशेष आमंत्रित सदस्य आदि उपस्थित थे। तपस्वियों के परिजनों ने अपने गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से भावनाएं व्यक्त की। सिरियारी के ठाकुर श्याम सिंह ने भी विचार व्यक्त करते हुए प्रसन्नता की। कार्यक्रम में पाली, ब्यावर, आमेट, करेड़ा, आसीन्द, सूरत, अहमदाबाद, बालोतरा, कांकरोली, भीलवाड़ा आदि से लगभग 600 की संख्या में जनता उपस्थित थी।

सभी तपस्वियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के मंत्री मर्यादा कोठारी ने किया तथा आभार ज्ञापन उतमचंद सुखलेचा ने किया।

कुंभकोणम

तमिलनाडु के कुंभकोणम नगर में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया महोत्सव का आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कुंभकोणम द्वारा किया गया। इस अवसर पर तीन श्राविकाओं के वर्षीतप के पारणे हुए। मुनि दीपकुमार जी ने कहा– अक्षय तृतीया का पवित्र दिन जैन धर्म के अनुसार इस युग में भिक्षा विधि के प्रारंभ का दिन है। आज के दिन भगवान ऋषभ का एक वर्ष से ऊपर की तपस्या का पारणा हुआ था। भगवान ऋषभ इस युग के प्रथम राजा कहलाए, प्रथम मुनि बने, प्रथम भिक्षुक कहलाए और प्रथम तीर्थंकर बने। भगवान ऋषभ का जीवन समग्रता लिए हुए था जिन्होंने समाज के लिए भी अपना समय लगाया और बाद में साधना में भी लीन बने। मुनिश्री ने आगे कहा– वर्तमान में भगवान ऋषभ की तपस्या को सामने रखकर हजारों–हजारों लोग वर्षीतप की साधना कर रहे हैं, यहां पर भी तीन बहने उपस्थित हैं। आज वर्षीतप करने वाली तीनों बहने दूसरे संप्रदाय की है पर फिर भी हमारे यहां वे उपस्थित हैं इसकी हमें प्रसन्नता है। तीनों बहने तप के क्षेत्र में बढ़ती रहे यही मंगलकामना करते हैं। मुनि काव्यकुमार जी ने संचालन करते हुए कहा – अक्षय तृतीया का पर्व त्याग और तपस्या की प्रेरणा देने वाला है। प्रभु ऋषभ एक अलौकिक और विलक्षण पुरुष थे। मुख्य वक्ता ज्ञानचंद आंचलिया, मुख्य अतिथि मेघराज लूणावत, प्रेम सुराणा ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम में मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने किया। स्वागत भाषण धर्मचंद छल्लाणी ने दिया। आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा अध्यक्ष विशाल सेठिया ने किया।

गुलाबबाड़ी

तीर्थंकर के प्रतिनिधि ग्यारहवें अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य महाश्रमण की सुशिष्या शासनश्री साध्वी धनश्री जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम तेरापंथ भवन गुलाबबाड़ी में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में मनाया गया। शासनश्री ने कहा- तीर्थंकर परम्परा में भगवान ऋषभ सर्वोत्कृष्ट और सुदीर्घ तपस्वी बनें। भगवान ऋषभ एक वर्ष तक अन्न और जल बिना रहे पौत्र श्रेयांस द्वारा इक्षु रस का पारणा करवाया। तपस्या का अपना महत्व है, तपस्या एक औषधि है इससे कर्मो का निर्जरण होता है। अनेक दृष्टांतों द्वारा तपस्या का महत्त्व बताते हुए शासनश्री ने दोनों तपस्वी साध्वियों के प्रति मंगल भावना व्यक्त करते हुए उन्हें तपस्या में और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा किया गया। तपस्वी साध्वी शीलयशा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। परिवारिक जनों ने अपना मंगल भावना भाषण, गीत आदि के द्वारा व्यक्त किए। साध्वी विदितप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए तपस्या की अनुमोदन की। सभा के अध्यक्ष व मंत्री एवं अणुव्रत समिति के मंत्र, सभा के पूर्वअध्यक्ष रतनलाल जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सलिलयशा जी ने किया। दिल्ली से समागत लालचंद दुगड़, कनक दुगड़, सूरत से समागत चेतन चोरड़िया, जयपुर से समागत, प्रेमबाई मेहता आदि ने भी अपने विचार व्यकत किए।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस पर चारित्रात्माओं के उद्गार

जसोल

'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ का 15 वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। ज्ञानशाला की बालिकाओं ने मंगलाचरण किया। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत द्वारा अभिवंदना की। 'शासनश्री' साध्वी द्वारा अभिवंदना की। 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि जिस तरह भिक्षु भारमल की जोड़ी थी उसी तरह आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ की जोड़ी थी। वे बड़ी उम्र में आचार्य पद पर नियुक्त होने वाले प्रथम आचार्य बने। अपने जीवन काल में उन्होंने अपनी आत्म कथा लिखाई, उन्होंने संघ को अनेकों आयाम दिए। महाप्रज्ञ स्वभाव के जितने सरल थे, उतने ही प्रकांड विद्वान भी थे। साध्वी ध्यानप्रभाजी, साध्वी श्रुतप्रभाजी एवं साध्वी यशस्वीप्रभाजी ने आचार्य महाप्रज्ञजी के व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त किए। विभिन्न संस्थाओं की ओर से लोगों ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने श्रद्धा भाव समर्पित किए। कार्यक्रम का सफल संचालन सभा मंत्री कांतिलाल ढेलडिया ने किया।

कांदिवली, मुंबई

'शासनश्री' साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सानिध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 15 वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। साध्वीश्री जी द्वारा 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः' मंत्र का जप करवाया गया। मंगलाचरण सुमन नाहटा ने किया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा विभा श्रीमाल ने भावांजलि अर्पित की। महिला मंडल ने सुंदर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा- आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी महान दार्शनिक, मूर्धन्य साहित्यकार, कुशल लेखक एवं न्याय, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, आयुर्वेद, आगम आदि विषयों के ज्ञाता विज्ञाता थे। आगम संपादन, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान उनके अमूल्य अवदान थे। महाप्रज्ञजी का व्यक्तित्व असाधारण एवं अनुपमेय था। साध्वी ऋद्धियशा जी ने कविता द्वारा, साध्वी प्रेरणाश्री जी ने सुंदर गीतिका द्वारा दशमाधिशास्ता को भावांजलि समर्पित की। सभाध्यक्ष पारसमल दुगड़ ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के अवदानों पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए। युवक परिषद अध्यक्ष नवनीत जैन, शांतिलाल कोठारी, निर्मला नौलखा आदि ने अपने विचार रखे। मंच संचालन साध्वी मृदुयशा जी ने किया।

चेन्नई

डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य 15वीं पुण्यतिथि का कार्यक्रम तेरापंथ सभा भवन, पल्लावरम् में आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जीवन सत्यम, शिवम, सुंदरम से युक्त था। जैसे एक छोटी बूंद में अथाह सागर लहरा रहा है, एक बीज में विशाल वटवृक्ष की क्षमता छिपी हुई है, एक किरण में सहस्त्रांश– सूर्य का तेज छिपा हुआ है, उसी प्रकार आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का जीवन अंधेरी राहों में प्रकाश पथ है। उनका हर वाक्य एक प्रेरणा है, समस्या का समाधान है। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि अज्ञ से महाप्रज्ञ की यात्रा का महत्वपूर्ण सूत्र है– समर्पण और विनम्रता। आपका ध्येय था– अहिंसा ही मेरा धर्म है और समर्पण ही मेरी प्रार्थना है। साध्वी दक्षप्रभाजी ने आराध्य की अर्चना में सुमधुर गीतिका प्रस्तुति की। मंच का कुशल संचालन साध्वी मेरुप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत कन्या मंडल के मंगलाचरण 'महाप्रज्ञ अष्टकम' से हुई। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष किरण गिरिया ने स्वागत भाषण दिया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका प्रियंका कटारिया ने कविता के द्वारा, तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने गीतिका के द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति की। तेरापंथ सभा के मंत्री दिलीप भंसाली ने आभार ज्ञापन किया।

पूर्वांचल कोलकाता

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के 15वें महाप्रयाण दिवस पर 'श्रद्धार्पण समारोह' का आयोजन द डिवनीटि पेवेलियन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (पूर्वांचल-कोलकाता) ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- आचार्यश्री महाप्रज्ञ जिनशासन के ज्योतिर्धर पुरुष थे। वे न्याय के राधाकृष्ण, ध्यान के कोलम्बस, आचार्यश्री तुलसी के विचारों के भाष्यकार व आधुनिक युग के विवेकानंद थे। वे प्रकृति से सहज, सरल, विनम्र स्वभाव वाले थे। उनका जीवन बहुआयामी था। उन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, आगम संपादन अहिंसा यात्रा आदि महनीय अवदान देकर दुनिया पर अपूर्व उपकार किया। उन्होंने देश में साम्प्रदायिक सद्भाव, सौहार्द्र, शांति स्थापना हेतु भगीरथ प्रयत्न किया। उन्होंने राजस्थान के सरदारशहर में वैशाख कृष्णा एकादशी के दिन मृत्यु पर प्रवचन कर उसी दिन महाप्रयाण कर दिया। वे भले ही सदेह आज हमारे मध्य नहीं है परंतु उनके विचार साहित्य रूप में आज भी हमारे बीच उपलब्ध है।

मुनि परमानंद जी ने कहा- आचार्यश्री महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व व्योम की तरह व्यापक था। वे ज्ञान के हिमालय थे। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल पूर्वांचल ने भावपूर्ण सुमधुर गीत से मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अणुव्रत समिति कोलकाता के मंत्री नवीन दुगड़ ने चुनाव शुद्धि अभियान की जानकारी दी। आभार ज्ञापन सभा मंत्री बालचंद दुगड़ व संचालन मुनि परमानंद ने किया।

बालोतरा

साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का 15वां महाप्रयाण दिवस कार्यक्रम न्यू तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। कन्या मंडल द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम् से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की स्तुति में सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की गई। साध्वी रतिप्रभा जी, साध्वी कलाप्रभा जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जीवन दर्शन पर विशेष प्रेरणा पाथेय प्रदान करवाया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, मुमुक्षु बहन शेफाली चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रकाश श्रीमाल एवं तेयुप ने गीतों के माध्यम से अपनी भावांजलि व्यक्त की। सभी श्रावकों एवं ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा सामूहिक रूप से और अपने-अपने घरो में 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः' का जप किया गया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के महाप्रयाण दिवस पर भाई बहनों ने एकासन, उपवास, आयंबिल रात्रि भोजन, त्याग एवं जमीकंद त्याग भी किये। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल, सभा, युवक परिषद, कन्या मंडल आदि संस्थाओं के पदाधिकारी और अन्य श्रावकगण उपस्थित हुए। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मनोज्ञयशाजी ने किया।

मलाड़

परम प्रतापी आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के 15वें महाप्रयाण दिवस का कार्यक्रम मलाड़ तेरापंथ भवन में साध्वी शकुंतलाकुमारी जी एवं डॉ. साध्वी पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्रोच्चारण व 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः' के जप से किया गया। रेखा व वंदना जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी शकुंतला कुमारी जी ने कहा- आचार्य महाप्रज्ञ जी मणिधारी मां बालूजी के पुत्र थे। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने उन्हें अज्ञ से महाप्रज्ञ बनाने में पुरुषार्थ किया। आचार्य महाप्रज्ञ जी समर्पण व संकल्प शक्ति से वे महायोगी, महान दार्शनिक, विशिष्ट संत व तेरापंथ धर्म संघ के महान, तेजस्वी आचार्य बने। डॉ. साध्वी पीयूषप्रभाजी ने कहा- आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी उच्च कोटि के चिंतक और मनीषी ही नहीं, वे श्रेष्ठ साहित्यकार और कवि भी थे। उनके साहित्य में समसामयिक समस्याओं का समाधान मिलता है। आपने कहा- उनका काव्य साहित्य आकर्षक है। महावीर और मेघ का संवाद जीवन और दर्शन की कई गुत्थियों को सुलझाने वाला है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को महाप्रज्ञ साहित्य पढ़ना चाहिए। साध्वी जागृतप्रभाजी ने कविता, साध्वी सुधाकुमारी जी ने जोशीले स्वरों में गीत, साध्वी भावनाश्रीजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी संचितयशाजी, साध्वी दीप्तियशाजी एवं साध्वी रक्षितयशा जी ने न्यूज चैनल के द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व व कर्तृत्व का रोचक विवरण प्रस्तुत किया। युक्ति व ध्यानी जैन ने भी अपनी भूमिका अदा की। तेयुप अध्यक्ष पेलेस मेहता, सभा अध्यक्ष इन्द्रचंद जैन, मंत्री हस्ति भंडारी, विनोद सोलंकी, महिला मंडल मंत्री मीना बाफणा, क्षेत्रपाल मंदिर के मांगीलाल लोढ़ा व महिला मंडल ने गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से श्रद्धासुमन अर्पित किए।

शास्त्री नगर, दिल्ली

'शासनश्री' साध्वी ललितप्रभाजी के सान्निध्य में दशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की 15वीं पुण्यतिथि के अवसर पर तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपने जीवन में हर क्षेत्र में विद्वता हासिल की। वे संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान बने। कालूगणी ने आपकी योग्यता को परखा और दीक्षा लेते ही आपके जीवन की डोर आचार्य तुलसी के हाथों थमा दी। उनका संकल्प था मेरे गुरु जिससे नाराज हो वह कार्य मैं कभी नहीं करूंगा।

वे योगी पुरुष थे। अपनी योग साधना द्वारा स्वयं अपने जीवन को सजाया। उनकी योग साधना से प्रभावित होकर ही भारत के राष्ट्रपति ए.पी.जे अब्दुल कलाम आपके परम भक्त बने और प्रधानमंत्री वाजपेयी आपके साहित्य के सच्चे पाठक बने। साध्वी अमितश्रीजी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी विनम्रता का उदाहरण प्रस्तुत किया। साध्वी कर्तव्ययशाजी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी आत्मद्रष्टा, युगद्रष्टा एवं भविष्यद्रष्टा संत थे। दिल्ली महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा मंजू जैन, मध्य दिल्ली महिला मंडल अध्यक्षा दीपिका छल्लाणी एवं सुरेश जैन ने अपनी प्रस्तुति दी।

इंदौर

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 15 वां महाप्राणा दिवस मनाया गया। साध्वीश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा - टमकोर जैसे छोटे से गांव में जन्मा व्यक्ति महाप्रज्ञ कैसे बना? महाप्रज्ञ कौन बनता है? महाप्रज्ञ वह बनता है जिसका कषाय उपशम हो। स्वयं आचार्य श्री ने फरमाया कि मुझे याद नहीं कि मेरे जीवन काल में मुझे सात बार भी तीव्र गुस्सा आया हो। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का कषाय बहुत उपशांत था। महाप्रज्ञ वह होता है जिसका समर्पण शिखर पर हो। गुरु के प्रति तो समर्पण था ही, अपने शिक्षा गुरु के प्रति भी पूर्ण समर्पित थे। महाप्रज्ञ वह होता है जो प्रसन्न रहे। महाप्रज्ञ वह होता है जो प्रतिक्रिया मुक्त रहे। साध्वी प्रज्ञप्रभाजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की बाल सुलभ चंचलता से लेकर स्थिरयोगी की यात्रा पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष ममता समोता ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका अंजु कठौतिया, मोहनलाल सेठिया ने गीत प्रस्तुत कर अपनी भावांजलि अर्पित की। पदमा मेहता ने महाप्रज्ञ अष्टम के द्वारा मंगलाचरण किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रेक्षाध्यान का प्रयोग किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी गीतार्थप्रभाजी ने किया।

तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

बीरगंज

अभातेमम के निर्देशन और स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल बीरगंज के तत्वावधान में समणी निर्देशिका डॉ. ज्योतिप्रज्ञा जी व समणी डॉ. मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आयोजित 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ समणी ज्योतिप्रज्ञा जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। कार्यसमिति की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष बबीता खटेड़ व मंत्री कुसुम मनोत आदि द्वारा महाश्रमण अष्टकम् का संगान किया गया। समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने गुरुदेव की अष्टगणी सम्पदा का सुंदर विश्लेषण करते हुए बताया कि आचार्यश्री महाश्रमणजी आचार संपदा, श्रुत संपदा, शरीर संपदा, वचन संपदा, वाचना संपदा, मति संपदा, प्रयोग संपदा और संग्रह संपदा आदि आठ संपदाओं के धनी हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी में गुरुदेव श्री तुलसी की झलक मिलती है। आचार्यश्री महाश्रमणजी हमारे धर्म संघ में 11वें अनुशास्ता हैं जिन्हें मोबाइल के इस युग में लाखों गाथाएं कंठस्थ हैं। रात्रि में करवट बदलते वक्त भी अपनी सजगता का परिचय देते हैं। कार्यक्रम में 50 महिलाओं द्वारा 50 अंक की श्रृंखला बनाकर आचार्य प्रवर की स्तुति की गई। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कुसुम मणोत तथा आभार ज्ञापन अध्यक्ष बबीता खटेड ने किया।

इरोड

मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में अभातेमम द्वारा निर्देशित 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' कार्यक्रम का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल इरोड द्वारा आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र के पश्चात मुनिश्री ने 'नेमा मां के नन्दन' गीत का मधुर संगान किया। मुनि हिमांशु कुमार जी ने अपने प्रवचन में आठ संपदाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य धर्म संघ की शासना करते हैं, दूसरों को प्रेरणा देते हैं, ज्ञान के भण्डार होते हैं, शास्त्रों का वाचन करवाते हैं, और भवसागर पार करने और कराने में सहयोगी बनते हैं। मुनि हेमन्तकुमार जी ने कहा कि गुरुदेव की संयम साधना युगों-युगों तक चलती रहे। कार्यकर्म में तेरापंथ सभा ट्रस्ट, महिला मण्डल, युवक परिषद् और धर्म संघ के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। महिला मण्डल अध्यक्षा पिंकी भंसाली एवम मंत्री पूनम दुग्गड़ की उपस्थिति में सफ़ल आयोजन हुआ।

नालासोपारा, मुंबई

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल नालासोपारा द्वारा पौध को सींचें एवं गुड पैरेंटिंग की कार्यशाला का सफल आयोजन साध्वी पुण्ययशा जी आदि के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वी पुण्ययशा जी ने नमस्कार महामंत्र द्वारा किया। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। महिला मंडल अध्यक्ष मानसी मेहता ने सभी का स्वागत किया। साध्वी वर्धमानयशा जी ने बच्चों को संस्कारी बनाने की प्रेरणा दी। साध्वी पुण्ययशा जी ने छोटी-छोटी घटनाओं द्वारा गुड पैरेंटिंग के महत्व को समझाते हुए कहा कि अच्छे संस्कार बच्चों का जीवन बना सकते हैं। कार्यक्रम में बहनों और कन्याओं की सराहनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन संगठन मंत्री रंजना सोलंकी ने किया। महिला मंडल मंत्री प्रवीणा खाब्या ने सभी का आभार व्यक्त किया।

गुवाहाटी

अभातेमम के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल गुवाहाटी द्वारा आचार्यश्री महाश्रमणजी के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव के पावन अवसर पर 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' कार्यक्रम माछकोवा में स्थित आईटीए सेंटर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के पावन संदेश का वाचन संगठन मंत्री रमन पटावरी ने किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण लोगो का अनावरण राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा, महामंत्री नीतू ओस्तवाल व उनकी टीम एवं महासभा के पदाधिकारी द्वारा किया गया। महाश्रमण अष्टकम् के संगान से महिला मंडल व कन्या मंडल की बहनों ने कार्यक्रम का मंगलाचरण किया। स्थानीय अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने अपने स्वागत वक्तव्य से समागत अतिथियों एवं उपस्थित केसरिया शक्ति का स्वागत करते हुए भाव व्यक्त किये। मुख्य वक्ता किशोर जैन ने आचार्यश्री महाश्रमणजी की अभिवंदना में उनके द्वारा रचित 'उठो शिष्य' पुस्तक की समीक्षा करते हुए कहा कि इस ग्रंथ से जीवन जीने की कला सीखें। यह ग्रंथ आत्म जागरण का साहित्य है। मंडल की बहनों द्वारा आचार्य महाश्रमण पर आधारित 'सवाल अंबर के, जवाब धरती पर' रोचक प्रस्तुति दी गई।

मधुर गायिका मीनाक्षी भूतोडिया ने स्वर लहरी से वातावरण को महाश्रमणमय बना दिया। कार्यक्रम संयोजिका विमला कोचर के प्रयास तथा पूरी टीम के सहयोग से यह कार्यक्रम सफल हो पाया। राष्ट्रीय कार्य समिति सदस्य सीमा बैद ने संकल्प पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री ममता दुगड़ ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष कुसुम कोटेचा ने किया।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

रायकोट, पंजाब

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में 2623वां महावीर जन्म कल्याणक दिवस बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वीवृंद ने आर्षवाणी के साथ प्रारंभ किया। साध्वी कनकरेखाजी ने अपने वक्तव्य में कहा- भगवान महावीर क्रांतिकारी पुरुष थे। उन्होंने जातिवाद, क्रियाकांड, नारी जाति का अपमान, दास प्रथा, पशुबलि आदि का विरोध कर मानवता को सही मार्गदर्शन दिया। जनकल्याण के लिए तीन प्रमुख संदेश दिए - अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत। आज विश्व में जो समस्या पैदा हो रही है, उन सबका समाधान भगवान महावीर के इन तीन सिद्धांतों में निहित है। इस अवसर पर साध्वी गुणप्रेक्षाजी, साध्वी संवरविभाजी, साध्वी केवलप्रभाजी व साध्वी हेमंतप्रभाजी ने महावीर जीवन दर्शन पर सिम्पोजियम की सरस प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में नगर पालिका प्रधान सुदर्शन जोशी, अमित जैन, गौरव जैन, उषा जैन, विनोद जैन, हरीश जैन, आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। अरविंद जैन ने स्वागत भाषण के साथ अपने विचार रखे। रायकोट, लुधियाना एवं जगराओ मंडी महिला मंडल ने समवेत स्वर में गीत की सुन्दर प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन बृजलाल जैन ने किया।

नेपाल

राज विराज (नेपाल) में आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में 2623 वीं महावीर जयंती का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा - आज भगवान महावीर की जन्म जयंती मनाई जा रही है, जन्म-जयंती उन्हीं की मनाई जाती है जिनका जीवन जय प्रधान होता है, जो दुनिया से अंजली बन कर लेता है एवं दुनिया को दरिया बनकर देता है। भगवान महावीर परम पुरुषार्थी थे, समन्वय में उनकी आस्था थी। आत्मवाद, लोकवाद, क्रियावाद आदि उनके सिद्धांत थे। वे समता के प्रतीक थे इसलिए साधनाकाल में आये उपद्रवों एवं परीषहों को वाटरप्रुफ बनकर झेला, चंडकौशिक एवं गौशालक की क्रोधाग्नि के सम्मुख फायरप्रुफ बन गए, गाली जैसे अनर्गल शब्दों को साउंडप्रुफ बनकर सहन किया, मौसम के हर थपेड़ों को एयरप्रूफ बनकर सहजता से झेल लिया। ऐसे वीर के पास मनोबल की शक्ति, कायबल की शक्ति, वचन बल की शक्ति अद्वितीय थी। साध्वीश्री ने नेपाली भाषा में महावीर का अभिवंदन कर उपस्थित जनमेदिनी को हर्ष-विभोर कर दिया। साध्वी स्वस्तिकाश्रीजी, साध्वी सुधांशुप्रभाजी, साध्वी गौतमयशा जी ने महावीर बैंक ऑफ़ वर्ल्ड कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मानव अधिकार कर्मी मनोहर ने अपने भावों की अभिव्यक्ति नेपाली भाषा में दी।

स्थानीय युवक परिषद्, महिला मंडल, कन्या मंडल ने अपनी अलग-अलग प्रस्तुति दी। सभा के पूर्वाध्यक्ष थारमल भंसाली, मंत्री मनीष दुगड़, विजय कुचेरिया आदि ने अपनी भावना वक्तव्य एवं गीत के माध्यम से रखीं। कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानशाला के नन्हें-बच्चों के मंगल संगान से हुआ तथा संचालन नीलम कुचेरिया ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस पर चारित्रात्माओं के उद्गार

जमशेदपुर

जमशेदपुर में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के महाप्रयाण दिवस पर समणी मधुरप्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन में कहा- आचार्य महाप्रज्ञ जी एक छोटे से गांव टमकोर में जन्मे थे। उन्होंने कभी स्कूल का दरवाजा नहीं देखा पर मैं आज आप लोगों को नत्थु से महाप्रज्ञ की यात्रा करवा रही हूं। नत्थु जब मुनि नथमल बने, वे कालुगणी के कर कमलों से दीक्षित हुए। वे गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित थे। समर्पण भाव, विनम्रता, निरहंकारिता ने उन्हें विकास की ऊंचाइयों तक पहुंचाया। आचार्यश्री तुलसी के पास उन्होंने शिक्षा ग्रहण ही नहीं की अपितु उनके द्वारा दिए सूत्रों को व्याख्यायित किया। चाहे आगम संपादन का काम हो, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत का काम हो इन सबको वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया। आचार्य महाप्रज्ञजी का साहित्य आज विद्वान लोगों को भी दीप बनकर आलोक दे रहा है। समणी जी ने कहा- महाप्रज्ञ वाङ्मय सदियों-सदियों तक लोगों को रोशनी देता रहेगा। आज हम उनके अवदानों के प्रति प्रणत हैं। समणी मननप्रज्ञा जी ने भी इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत किए। महिला मंडल की बहनों ने गीत के माध्यम से अपने भावांजलि प्रस्तुत की। ज्ञानशाला के बच्चों ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

कांकरिया, मणिनगर

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 15वें महाप्रयाण दिवस का कार्यक्रम तेरापंथ भवन कांकरिया मणिनगर में 'शासनश्री' साध्वी रामकुमारी जी के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी आत्मप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ विनम्रता, पवित्रता, सरलता के साथ प्रज्ञा के अकूत भंडार थे। उनकी प्रवचन और लेखन शैली अपने आप में विलक्षण थी। उन्होंने 300 से अधिक पुस्तकों का निर्माण कर जन-जन को प्रज्ञावान बनाने का प्रयास किया। साध्वी सुविधिप्रभा जी, साध्वी हर्षितप्रभा जी व साध्वी अर्वतिप्रभा जी ने भी अपने भावों की प्रस्तुति दी। कांकरिया महिला प्रकोष्ठ की बहिनों ने गीतिका की प्रस्तुति दी। सभा उपाध्यक्ष चंपालाल गांधी व नीतू चोपड़ा ने भी अपने श्रद्धा भाव अर्पित किए।

मनुष्य के वर्तमान जीवन शैली में धन और धर्म का संतुलन जरूरी

विजयनगर।

साध्वी सिद्धप्रभा जी का तुमकुर रोड स्थित भिक्षु धाम में मंगल पदार्पण हुआ। अभातेयुप निर्देशित व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'धन और धर्म' पर साध्वी सिद्धप्रभा जी ने श्रावक जीवन में धन को अर्जन करने में प्रमाणिकता रखने की प्रेरणा दी। धर्म ज्ञान, दर्शन और तप की निष्पति है। संयममय जीवन धन और धर्म के मर्म में संतुलन कर सकता है। साध्वी आस्थाप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से कार्यशाला में उपस्थित लोगों को प्रेरणा प्रदान की।

साध्वी मलययशाजी ने कहानी के माध्यम से सुखी जीवन में संतोष का महत्व बताया। साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने जरूरत, आराम और विलासिता में फर्क बताते हुए विलासिता को छोड़ने की प्रेरणा दी। परिषद अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर अभातेयुप परिवार से राकेश दक, विकास बांठिया, प्रबंध मंडल, कार्यकारिणी सदस्य, स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया। आभार सहमंत्री संजय भटेवरा ने किया।

सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गादिया, कोठारी और गादिया परिवार के सदस्यों ने साध्वी सिद्धप्रभा जी के भिक्षु धाम, बैंगलोर पहुंचने पर अभिनंदन किया।

स्वागत कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडिया ने किया।

व्यक्तिव विकास कार्यशाला 'धन और धर्म' पर साध्वी सिद्धप्रभा जी ने श्रावक जीवन में धन को अर्जन करने में प्रमाणिकता रखने की प्रेरणा दी।

वीतराग कार्यशाला का सफल आयोजन

नालासोपारा, मुंबई। अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप नालासोपारा द्वारा साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ की गई। तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत की प्रस्तुति दी गई। साध्वी पुण्ययशाजी ने कहा कि राग-द्वेष की भावना व पदार्थों के प्रति आसक्ति को छोड़े बिना वीतरागी नहीं बना जा सकता।

मनुष्य के जीवन में दया के भाव और सब जीवों के प्रति हित की भावना होनी चाहिए। साध्वीवृंद द्वारा ध्यान एवं प्रश्नोत्तर का सत्र रखा गया। आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष मुकेश मेहता द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप पदाधिकारी, कार्यकर्त्ता, किशोर मंडल, सभा, महिला मंडल आदि के साथ समाज की सराहनीय उपस्थिति रही।

भगवान ऋषभ का दीक्षा दिवस बड़े ही उल्लास से मनाया गया

कालवादेवी (मुंबई)। 'शासनश्री' मुनि धर्मरुचिजी के सान्निध्य में भगवान ऋषभ का दीक्षा दिवस बड़े ही उल्लासमय वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम में मुनि कमल कुमारजी ने कहा कि तीर्थंकर के पंच कल्याणक प्रसिद्ध हैं जिसे समग्र जैन मानते हैं। उनमें तीसरा कल्याणक दीक्षा कल्याणक माना जाता है। हमारी मान्यता है कि दीक्षा लेते ही वे वंदनीय बन जाते हैं।

आज हम भगवान ऋषभ को श्रद्धा से वंदन करते हैं। आज के दिन काफी श्रद्धालु वर्षीतप प्रारंभ करते हैं, यहां भी लोग अपनी शक्ति के अनुसार आगे बढ़ने का प्रयास करें। मुनि जंबू कुमारजी ने भगवान ऋषभ की स्तुति स्वरूप चौबीसी की गीतिका का संगान करते हुए 'ॐ ऋषभाय नमः' का जप करवाया। मुनि मनन कुमार जी ने कहा कि भगवान ऋषभ ने अष्टमी के उपवास के बाद नवमी को बेले में दीक्षा स्वीकार की, लोगों को जीने की कला सीखाकर साधुत्व को स्वीकार किया। उन्होंने गृहस्थ जीवन और साधु जीवन दोनों जी कर दोनों को सफल बनाने की कला सिखाई।

❖ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा। -आचार्य श्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती द्वारा प्रदत्त विभिन्न पुरस्कारों हेतु
आवेदन आमंत्रण

पूज्यप्रवरों के चिंतन का एक प्रमुख सृजन है समाज की कामधेनु "जैन विश्व भारती"। जैन विश्व भारती शिक्षा, शोध, साधना, सेवा, संस्कृति आदि क्षेत्रों में तो सक्रिय भूमिका निभा ही रही है साथ ही साथ सम्मान एवं प्रोत्साहन के क्षेत्र में भी गतिशील है। इस संदर्भ में जैन विश्व भारती द्वारा 09 पुरस्कार विभिन्न ट्रस्टों एवं महानुभावों के सहयोग से संचालित हैं। ये पुरस्कार प्रतिवर्ष निर्धारित अर्हताओं के आधार पर क्षेत्र विशेष में विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को प्रदान किये जाते हैं। पुरस्कारों से संबंधित विवरण अग्रलिखित है -

(1) आचार्य तुलसी अनेकांत सम्मान :
अर्हता :
1. सापेक्षता समन्वय, सहप्रतिपक्ष, सहिष्णुता एवं सहअस्तित्व के प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयन में योगदान।
2. जैन दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धान्त 'अनेकान्त' के प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान।

(2) आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा सम्मान:
अर्हता :
1. अहिंसा का व्यापक प्रचार-प्रसार एवं आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत अभिनव शांति तकनीक 'अहिंसा प्रशिक्षण' के विकास और संवर्धन में विशेष योगदान।
2. अहिंसा प्रशिक्षण के क्षेत्र में नवसृजन अथवा अन्य उल्लेखनीय कार्य का संपादन।
3. अहिंसा प्रशिक्षण के विविध आयामों हृदय परिवर्तन, दृष्टिकोण परिवर्तन, जीवन शैली परिवर्तन, व्यवस्था परिवर्तन एवं आजीविका प्रशिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य।

(3) महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषा पुरस्कार :
अर्हता :
1. जैन आगमों के विकास, विस्तार एवं संवर्धन में विशेष योगदान।
2. जैन आगम एवं जैन विद्या के क्षेत्र में शोधपूर्ण एवं विशिष्ट कार्य के द्वारा जैन आगमों के संवर्धन में योगदान।

(4) गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार :
अर्हता :
1. केवल महिलाओं के लिए।
2. जैन विद्या के विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट शोध कार्य कर जैन विद्या के विकास में महत्वपूर्ण योगदान।

(5) आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार :
अर्हता :
1. जैनागम एवं प्राकृत भाषा तथा साहित्य के विकास एवं संवर्धन में विशेष योगदान।
2. प्राकृत एवं पाली जैसी प्राचीन भाषाओं के विकास एवं पाण्डुलिपियों के संरक्षण, संपादन एवं प्रकाशन की दिशा में उल्लेखनीय कार्य।
3. नैतिक मूल्यों व श्रमण संस्कृति में आस्था, तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धान्तों, आदर्शों एवं आचार्य के प्रति निष्ठा।

(6) आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार :
अर्हता :
1. आचार्य महाप्रज्ञ के चिन्तन और विचारों को मूर्त रुप प्रदान करते हुए उन्हें साहित्य के माध्यम से प्रसारित करने में विशेष योगदान।
2. जैन विद्या व आचार्य महाप्रज्ञ के विशाल साहित्य का गहन अनुशीलन कर सत्साहित्य सृजन में श्रीवृद्धि का कार्य।
3. नैतिक मूल्यों व श्रमण संस्कृति में आस्था, तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धान्तों, आदर्शों एवं आचार्य के प्रति निष्ठा।

(7) प्रज्ञा पुरस्कार :
अर्हता : शिक्षा, चिकित्सा, पर्यावरण, संस्कृति, पत्रकारिता, कला एवं शिल्प आदि क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान अथवा उल्लेखनीय कार्य।

(8) संघ सेवा पुरस्कार :
अर्हता :
1. संघ एवं संघपति के प्रति निष्ठा, आस्था एवं सेवा भावना को जागृत, प्रोत्साहित एवं वर्धापित करने में विशेष योगदान।
2. धर्मसंघ के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण सेवाएँ।
3. नैतिक मूल्यों व श्रमण संस्कृति में आस्था, तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धान्तों, आदर्शों एवं आचार्य के प्रति निष्ठा।

(9) जय तुलसी विद्या पुरस्कार :
अर्हता : ऐसी शिक्षण संस्था जिसने जीवन विज्ञान एवं मूल्यपरक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों एवं गतिविधियों को संपादित किया हो।

नोट - उपरोक्त में से किसी भी पुरस्कार के लिए निर्धारित अर्हताओं के अनुसार योग्य पाये जाने पर कोई भी व्यक्ति या संस्था अपने स्वयं या दूसरे व्यक्ति या संस्था के नाम के लिए प्रविष्टियां प्रस्तावित कर सकते हैं। प्रविष्टि के समय विशेष तौर पर इस बात को ध्यान में रखा जाये कि संबंधित व्यक्ति उस पुरस्कार विशेष से प्राप्त क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त हो। प्रविष्टि के रूप में संबंधित व्यक्ति या संस्था का बायोडाटा, फोटो एवं विशेष विवरण निम्नलिखित पते पर प्रेषित किया जा सकता है-

आवेदन भेजने हेतु पता : जैन विश्व भारती
पोस्ट लाडनूं 341306, जिला नागौर (राजस्थान)
संपर्क सूत्र: (01581) 226080, 224671
ई-मेल: jainvishvabharati@yahoo.com, ladnun@jvbharati.org

साधु की उपासना से हो सकते हैं अनेक लाभ : आचार्यश्री महाश्रमण

शेलगांव।
15 मई, 2024

धर्म-धुरन्धर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज शेलगांव पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि हमारे पास पांच इंद्रियां हैं। पांच इंद्रियों में एक है श्रोतेंद्रिय। जिस प्राणी के पास कान होता है, वह प्राणी इंद्रियों की दृष्टि से विकसित प्राणी होता है।

श्रोत्र होता है और श्रवण शक्ति अच्छी होती है तो आदमी सुन सकता है। सुनना कान की एक प्रवृत्ति है। सुनने से बहुत ज्ञान हो सकता है। अच्छी और गलत बात को आदमी सुनकर जान सकता है। जहां तक हो सके अच्छी बात सुनो। बुरा सुनो मत, बुरा देखो मत, बुरा बोलो मत, बुरा सोचो मत और बुरा करो मत। सब अच्छा सुनें। दुःखी आदमी का दुःख भी मौका लगे तो सुनने का प्रयास करें, आध्यात्मिक सेवा करने का प्रयास करें।

सुनन से ज्ञान मिलेगा, इसलिए सुनना चाहिए। बात को ध्यान से, मन से सुनें। कान का बढ़िया उपयोग करें। त्यागी-साधु की पर्युपासना करने से अच्छी बात सुनने को मिलती है, सुनने से ज्ञान होता है फिर विज्ञान होता है कि क्या छोड़ने लायक है, क्या ग्रहण करने लायक है। विज्ञान होने से आदमी हेय को छोड़ देता है। प्रत्याख्यान हो गया तो जीवन में संयम हो गया। संयम हो गया तो संवर होगा, तपस्या होगी, कर्म कटेंगे, योग निरोध हो अक्रिया की स्थिति होगी, फिर आगे सिद्धि-मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। साधु की उपासना से इतने एक के बाद एक लाभ हो सकते हैं।

साधु की तो थोड़ी देर की सत्संगत भी लाभदायी हो सकती है। शिक्षा संस्थान भी ज्ञान ग्रहण का बड़ा स्थान होता है। बच्चों में ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार आ जाए। विद्यार्थी में अहिंसा, ईमानदारी का भाव आ जाए। बुद्धि के साथ भावनात्मक शुद्धता रहे। संस्कार युक्त शिक्षा से विद्यार्थियों का कल्याण होने की संभावना रह सकती है। मानव जीवन हमें प्राप्त है, इसका बढ़िया उपयोग करें।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के उपक्रम लोक कल्याणकारी उपक्रम हैं। जीवन में सद् आचार और सद् विचार रहे। आदमी भाग्य के साथ अच्छा पुरुषार्थ भी करे। स्वयं का काम स्वयं करने का प्रयास करें, आलसी न बने। ज्ञान-विज्ञान करते-करते हमारी आत्मा कल्याण को प्राप्त हो सकती है।

पूज्यवर ने बच्चों को संकल्पत्रयी समझाकर स्वीकार करवाये। गुरु मिश्री होमियोपैथी मेडिकल कॉलेज की ओर से योगेश देसरड़ा, कोमल देसरड़ा, कंचन देसरड़ा ने पूज्य प्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

वैशाख शुक्ला दशमी...

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के निर्णय और निर्देश के अनुरूप धर्मसंघ की ओर से विधिवत आज के दिन यह कर्तव्य की चद्दर मुझे मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'सुदर्शन' ने ओढ़ाई थी। अनुशास्ता बनने से पहले यह सोचना चाहिए कि मैं अनुशासित बना हूं या नहीं। 'निज पर शासन फिर अनुशासन।' जो सन्यासी है, उन पर अनुशासन करना बहुत भाग्य की बात है। मूलतः साधुता बड़ी बात है। हमारे धर्मसंघ में आचार्य को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। तुलना करें तो एक सम्राट-राजा की तरह आचार्य होते हैं। आचार्य के पास सारे अधिकार होते हैं। संगठन को अनुशासन में चलाना भी एक प्रकार की तपस्या-साधना होती है। हमारे साध्वीप्रमुखाजी साध्वी समुदाय की देखभाल करने वाले हैं। इधर साध्वीवर्या व मुख्य मुनि व्यवस्थाओं से जुड़े हुए हैं। आचार्य धर्माचार्य होते हैं। धर्म संबंधी निर्णय करना, शास्त्रों का पठन-पाठन करना भी धर्माचार्य करते हैं। हम अध्यात्म की साधना को पुष्ट करते रहें। मैं आज के दिन आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का स्मरण करता हूं। उन्होंने मुझे नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ाया था। आज के दिन आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने तो पूर्णरूपेण अपना अधिकार मुझे सौंपा था। गुजरात के राज्यपाल महोदय की भी आज आना हुआ है।

मुख्य मुनि महावीरकुमारजी ने कहा कि आज का दिन जैन शासन एवं तेरापंथ धर्मसंघ के लिए एक विशिष्ट दिन है। 14 वर्षों के काल में गुरुदेव ने हमें यह बता दिया है कि वे एक वीतरागता की मूर्ति बन गये हैं। आपका व्यक्तित्व और कर्तृत्व पावन और महान है। आपका शासनकाल साधना से ओत-प्रोत शासनकाल है। आचार्यप्रवर के शासन में पवित्रता और निश्चिन्तता है।

तेरापंथ सभा के मंत्री अनिल संचेती ने स्वागत वक्तव्य दिया, राजकुमार पुगलिया ने राज्यपाल महोदय का परिचय प्रस्तुत किया।

पूज्यवर की अभ्यर्थना में मुनि राजकुमारजी, मुनि विनम्रकुमारजी, मुनि सुधांशुकुमारजी, मुनि रत्नेशकुमारजी, मुनि अर्हमकुमारजी, मुनि ऋषिकुमारजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

राज्यपाल महोदय की उपस्थिति में राष्ट्रगान का गायन हुआ। संघगान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आदर्श के अनुरूप...

संस्कार निमित्त मिलने से आदमी कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। मेरे संसारपक्षीय पिताजी झूमरमल जी सूर्यरूपी तेजस्वी तत्व के सामने खड़े होकर हाथ जोड़ते थे, माला फेरते थे। माता-पिता को देखने से भीतर में संस्कार उपलब्ध हो सकता है।

मुझे संसारपक्षीय पिताजी का साया लगभग सात वर्ष तक ही मिला था। दादाजी हुकमचन्दजी उस समय विद्यमान थे। माताजी व बड़े भाईजी सुजानमल जी के साये में रहने का मौका मिला। थोड़ी पढ़ाई करने का भी मौका मिला। बाद में जीवन में धर्म और अध्यात्म का रास्ता मिल गया। इस मानव जीवन में कुछ कर सके तो वो खास बात होती है। बाद में तो गुरुओं का संरक्षण मिला। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के सान्निध्य का अवसर मिला। बचपन में स्कूल में अध्यापकत्व भी प्राप्त हुआ। साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं के भी प्रमोद भाव है। साध्वी सुमतिप्रभाजी व साध्वी चारित्रप्रभाजी मेरी संसारपक्षीय भतीजी हैं। मुझे परिवार के साथ रहने का कम ही अवसर मिला। धर्म परिवार बड़ा है, मैं छोटे परिवार से बड़े परिवार में आ गया।

जीवन में आदर्श बनाना चाहिए। आदर्श के अनुरूप जितना हो उसके निकट जाने का प्रयास करें। अच्छे आदर्श से अच्छी गति-प्रगति हो सकती है। जन्म दिवस तो एक शिष्टाचार है। इसके निमित्त से प्रमोद भावना प्रकट की जा सकती है। हमें हमारे धर्मसंघ में विकास करने का अवसर मिला है। छः दिवसीय आयोजन का आज प्रथम दिवस है। कोई प्रेरणा जाग जाये तो जन्म दिवस मनाना सफल हो सकता है। हर प्राणी का अपना जन्म दिवस होता है, पर किसी-किसी का जन्म दिवस आयोजन के रूप में मनाया जाता है। जीवन में आदमी अच्छा पुरुषार्थ करने का प्रयास करें। केवल भाग्य भरोसे न बैठे। भाग्य भरोसे बैठे रहने वाला अभागा आदमी होता है।

अच्छी राह मिले, भीतर में चाह मिले और अच्छा उत्साह जागृत रहे तो आदमी कहीं पहुंच सकता है, कुछ प्राप्त कर सकता है। हम सभी जीवन में ऐसा कुछ करें कि आगे कभी जन्म न लेना पड़े। अजन्मा बनने की साधना सिद्ध हो जाये। जन्म से अजन्म की ओर बढ़ने का प्रयास श्रेयस्कर हो सकता है। साधु को न्यातिलों का ज्यादा मोह-आकर्षण नहीं रखना चाहिए। पूज्य प्रवर की अभिवंदना में साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के शब्द हैं- 'युवाचार्य महाश्रमण के हाथ प्राणवान हैं।' मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्राणवान हाथों की अभ्यर्थना करती हूं। आप एक ओजस्वी आचार्य हैं, विलक्षण स्मृति के धारक हैं। आप स्वतंत्र रूप में निर्णय लेते हैं, प्रतिकूल स्थितियों को बड़े धीरज से सहन कर लेते हैं, निर्भीक रहते हैं। आपके पास श्रमणत्व, आचार्यत्व और ब्रह्मचर्य का तेज है।

आचार्यवर को जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'सात बातें ज्ञान की' संसारपक्षीय भ्राता सुजानमलजी दुगड़ द्वारा समर्पित की गयी। पूज्यवर की अभ्यर्थना में संसारपक्षीय भ्राता सुजानमलजी दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। संसारपक्षीय दूगड़ परिवार द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई। मनन बागरेचा व तेरापंथ महिला मंडल की प्रस्तुति हुई। जय माता दी ग्रुप द्वारा 'जालना सोने का पालना' की प्रस्तुति हुई। साध्वी वृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया। अनेकों साधु-साध्वियों एवं समणियों ने पूज्य प्रवर की अभिवंदना में अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का सञ्चालन मुनि दिनेश कुमार जी द्वारा किया गया।

भाग्यशाली ही कर सकता है संयम का जीवन भर निर्वाह : आचार्यश्री महाश्रमण

गढ़ेजल गांव।
13 मई, 2024

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्य श्री महाश्रमण जी गढ़ेजल पधारे। दिनांक के अनुसार 13 मई को परम पावन आचार्य प्रवर का जन्मदिवस था। पूज्यवर ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि निर्ग्रन्थ वे होते हैं जो पांच आश्रवों का परित्याग करने वाले, तीन गुप्तियों से गुप्त, छः काय के जीवों के प्रति संयमी और पांच इन्द्रियों का निग्रह करने वाले धीर होते हैं, ऋजुदर्शी होते हैं। ये संन्यासी या साधु के लक्षण बताए गए हैं।

साधुता बडी चीज है, साधुता प्राप्त हो जाने के बाद दुनिया की बड़ी से बड़ी भौतिक चीज भी बहुत छोटी हो जाती है। संन्यास बहुत बड़ा हीरा है। साधु तो अंकिंचन होता है पर साधु के पास जो चीज है, वो गृहस्थों के पास नहीं है, इसलिए बड़े-बड़े सत्ताधीश भी साधु के सामने नतमस्तक-प्रणत हो जाते हैं। यह साधु की साधना का महात्म्य है। कहा तो गया है कि देवता भी उसको नमस्कार करते हैं जिसका मन हमेशा धर्म में रमा रहता है।

कोई भाग्यशाली आदमी ही संन्यास को प्राप्त कर जीवन भर निर्वाह कर सकता है। गृहस्थ जीवन में भी संयम रखा जा सकता है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम गृहस्थ के जीवन में आ जाये तो गृहस्थ जीवन अच्छा हो सकता है। आचार्य भिक्षु एक महान संतपुरुष थे, उनके जन्म त्रिशताब्दी का वर्ष आने वाला है। जन्म होना एक बात है, तपस्या करना, साधना करना, संन्यास का जीवन जीना बड़ी बात होती है। आचार्य प्रवर ने जयाचार्य द्वारा वैशाख शुक्ला षष्ठी को बीदासर में रचित 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी भरत खेतर में' का आंशिक संगान करवाया।

संन्यास लेने वाले संत पुरुष दूसरों को भी प्रेरणा देने वाले होते हैं जिससे लोगों में अच्छी भावना जाग सकती है, अच्छा उत्कर्ष हो सकता है, अच्छा परिवर्तन आ सकता है। कहा गया है- 'संत न होते जगत में, जल जाता संसार'। दुनिया का सौभाग्य है कि दुनिया में साधु हमेशा रहते हैं। कम से कम 20 तीर्थंकर भी हमेशा दुनिया में रहते हैं। गृहस्थों में भी संसार में रहते हुए कमल पत्र की तरह निर्लेप रहने की चेतना जाग जाए। अहिंसा, सत्य, अचौर्य आदि नियम रहें तो आत्मा शुद्ध रह सकती है, आगे का जीवन भी अच्छा रह सकता है। पूज्यप्रवर के स्वागत में भंडारी एवं फूलफगर परिवार की ओर से गौतम फूलफगर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल का शुभारंभ

दोंडाईचा।
21 मई, 2024

तेरापंथ युवक परिषद दोंडाईचा द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल (गर्ल्स) का शुभारंभ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में जैन संस्कार विधि से हुआ। आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल (बॉय्ज) का शिलान्यास भी इस अवसर पर किया गया। संस्कारक भूषण कांकरिया तेरापंथ युवक परिषद साक्री से उपस्थित थे।

तेरापंथ युवक परिषद दोंडाईचा द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा ने कहा कि पहली बार 6 प्रोजेक्ट का शुभारंभ एक साथ हो रहा है। डायलिसिस प्रोजेक्ट के दानदाता के. एम. अग्रवाल का सम्मान रमेश डागा ने किया। वर्धमान एजुकेशन एंड वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष राजेश मुनोत ने कहा कि गुरु कृपा से एक मेडिकल स्टोर से मेडिकल कॉलेज का निर्माण हो गया, हॉस्टल और हॉस्पिटल की भी शुरुआत हो गई। राजेश मुनोत ने आभार ज्ञापन करते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ युवक परिषद शहादा, साक्री एवं शिरपुर से पधारे हुए साथियों का आभार व्यक्त किया। वरिष्ठ श्रावक भूरमल बंब के मंगलपाठ उच्चारण के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप मुनोत ने किया।

कार्यक्रम में अभातेयुप उपाध्यक्ष प्रथम पवन मांडोत, उपाध्यक्ष द्वितीय जयेश मेहता, संगठन मंत्री अमित सेठिया, आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल प्रभारी संदीप हिंगड़, सरगम प्रभारी अर्पित नाहर एवं ATDC प्रभारी सौरव मुनोत उपस्थित थे।

अभिनंदन ग्रंथ 'मूल से यशशिखर तक' का लोकार्पण

छत्रपति संभाजी नगर।
13 मई, 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजी नगर (औरंगाबाद) जिले के सेकता ग्राम में 13 मई 2024 को आयोजित समारोह में समाजसेवी मूलचन्द नाहर के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर आधारित अभिनंदन ग्रंथ 'मूल से यशशिखर तक' का लोकार्पण किया गया।

पूज्यप्रवर की अमृत देशना के बाद लोकार्पण समारोह का गरिमामय संचालन करते हुए अभिनंदन ग्रंथ के प्रधान संपादक अविनाश नाहर ने मूलचन्द नाहर के व्यक्तित्व की विशिष्टताएं बताईं। उन्होंने नाहर द्वारा जन-जन में मानवीय मूल्यों के विकास के गुरुतर उद्देश्य से संघसेवा तथा समाजसेवा के क्षेत्र में किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संपादक मोहन मंगलम तथा ग्राफिक आर्टिस्ट आशुतोष राय के श्रम-बूंदों से अभिनंदन ग्रंथ के संपादन का दुरुह कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हो सका। तत्पश्चात् नाहर परिवार से विजेता रायसोनी, साची रायसोनी और हिमानी नाहर ने पूज्यप्रवर के समक्ष अभिनंदन स्वरूप गीतिका की प्रस्तुति दी। मूलचन्द नाहर के साथ कर्नाटक के पूर्व लोकायुक्त एवं उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस एन. संतोष हेगड़े, पूर्व मेजर जनरल नरपतसिंह राजपुरोहित, मारवाड़ जंक्शन के विधायक केसाराम चौधरी, सिरियारी के ठाकुर मल्लीनाथ सिंह आदि ने अभिनंदन ग्रंथ का लोकार्पण करने के साथ ही पूज्य गुरुदेव को निवेदित किया।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि आदमी के जीवन में सरलता हो, वह छल-कपट से मुक्त रहे और सेवा भावना हो, सहिष्णुता हो, संयम की चेतना हो, अहंकार न आए। जो दूसरों के लिए कुछ करता है, जिस व्यक्ति में आध्यात्मिकता होती है, वह व्यक्ति दूसरों के लिए प्रिय बन सकता है, कहीं-कहीं अजातशत्रु और सर्वप्रिय भी कुछ अंशों में या पूर्ण अंशों में बन सकता है। मूलचन्द जी नाहर के संदर्भ में अभिनंदन ग्रंथ का लोकार्पण हुआ है। यह ग्रंथ लोगों के लिए प्रेरणा का निमित्त बने। नाहर परिवार और मूलचन्द नाहर खूब अच्छा धार्मिक आध्यात्मिक सेवा का कार्य करते रहें, यही मंगल कामना है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि केवल अर्थ से ही व्यक्ति महान नहीं होता है। अर्थ तो बहुत से व्यक्तियों के पास हो सकता है, लेकिन मूलचन्द जी में गुणवत्ता, सरलता, निगर्विता और अनासक्ति जैसे अनेक गुण हैं जिनके कारण उनका व्यक्तित्व लोगों को भा रहा है। मैं मंगलकामना करती हूं कि मूलचन्द जी की संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा और आचार निष्ठा उत्तरोत्तर वृद्धिंगत होती रहे।

मुख्यमुनि महावीरकुमारजी ने कहा कि जिस व्यक्ति की गुरु के प्रति श्रद्धा होती है, समर्पण होता है और जिसके जीवन में गुरुकृपा होती है, वह व्यक्ति हर कार्य को निर्विघ्नता से संपन्न करने में सक्षम होता है। मूलचन्द नाहर धार्मिक गुणों का विकास करते हुए अपने जीवन को उत्तम श्रावक की कोटि में लेकर आएं, ऐसी मंगलकामना। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने कहा कि मूलचन्द नाहर श्रद्धाशील श्रावक हैं जो देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा भाव रखते हैं। पूज्य चरणों में जस्टिस एन. संतोष हेगड़े, पूर्व मेजर जनरल नरपत सिंह राजपुरोहित, मारवाड़ जंक्शन के विधायक केसाराम चौधरी ने अपने विचार व्यक्त किये। मूलचन्द नाहर ने कृतज्ञता का भाव व्यक्त करते हुए कहा कि गुरुदेव, मेरी सारी सफलता आपकी कृपा पर ही निर्भर है। आपकी कृपा से सारे काम होते जा रहे हैं। आपके चरण जैसे ही सामने आते हैं, मैं निश्चिंत हो जाता हूं। आपका नाम लेकर काम में जाते हैं तो सारी समस्याएं खत्म हो जाती हैं। शशिकला नाहर, प्रकाश मूथा, ललित जैन आच्छा, धर्मीचंद धोका, विजेता रायसोनी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन मुकेश नाहर ने किया।

उत्थान के बाद नहीं करे प्रमाद : आचार्यश्री महाश्रमण

जालना।
19 मई, 2024

छः दिवसीय आचार्य महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव समापन का तीसरा दिन। युगप्रधान, युगदृष्टा आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्षवाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि जब जाग गये हो, तो अब प्रमाद मत करो। अनन्तकाल की यात्रा में यह मानव जीवन मिलता है। मानव जीवन में जब वैराग्य भाव प्रस्फुटित हो जाता है, मनुष्य त्याग-संयम के पथ पर चलने के लिए तैयार हो जाता है, यह बहुत बड़ा उत्थान होता है। उत्थान होने के बाद फिर वह प्रमाद न करे तो वह अपनी परम मंजिल को भी प्राप्त कर सकता है।

हमारे यहां सामान्यतया वर्तमान आचार्य का पट्टोत्सव मनाया जाता है यह एक संघीय समारोह होता है। आचार्य का अपना एक स्थान होता है, जैन श्वेतांबर तेरापंथ के आचार्यों का एक दशक व्यतीत हो गया है। दूसरे दशक की प्रथम कड़ी का आचार्यकाल चल रहा है। पंच परमेष्ठी में आचार्य का मध्य स्थान होता है। मानो ऊपर वाले दो का आशीर्वाद और नीचे वाले दो का सेवा सहयोग।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ में आचार्य एक उच्च स्थान होता है, सर्वोच्च स्थान धर्मसंघ में होता है। समय के अनुसार स्थितियां बदल सकती हैं। आचार्य भिक्षु तो बोझ लेकर भी विहार करते थे, पर वर्तमान में ऐसा नहीं है। आचार्य की अपनी सम्पदाएं हैं, छत्तीस गुण बताये गए हैं, वे गुण अच्छी तरह से आत्मसात हो जाये तो मानना चाहिए कि आचार्य सम्पदा अच्छी है।

आचार्य आदर्श के रूप में भी रहे हैं। मोक्ष की दृष्टि से अच्छी बात है कि आचार-सम्पदा मजबूत है। जो आचार्य दायित्व निर्वहन अच्छी तरह कर लेता है उसको मोक्ष में जाने के लिए पांच जन्मों से ज्यादा लेने नहीं पड़ते। छत्तीस गुण अच्छे रहें तो वह मोक्ष की दिशा में अनुकूल और आगे बढ़ने वाला है। सबसे बड़ी सम्पदा तो आचार सम्पदा है, इसके आगे देखें तो आचार्य के पास श्रुत सम्पदा भी है। हमारे धर्म संघ में वैधानिक रूप से उपाध्याय का पद किसी को नहीं दिया गया है। आचार्य ही उपाध्याय के दायित्व से युक्त हैं। आचार्य के पास तत्व, शास्त्र व भाषा का भी ज्ञान हो, आचार्य को बहुश्रुत भी होना चाहिए।

आचार्य के पास शरीर सम्पदा भी हो। ज्यादा रूपवान होना जरूरी नहीं, शरीर सबल होना चाहिए। स्वास्थ्य का उचित ध्यान भी रखना चाहिए। तपस्या-साधना युक्त शरीर दर्शनीय होता है। वचन सम्पदा भी अच्छी हो, वाणी स्पष्ट शुद्ध हो। वाचन-अध्यापन सम्पदा भी अच्छी हो, मति-प्रज्ञा अच्छी रहे। शुद्ध भावना से निर्णय करें। तार्किक ढंग से प्रश्न का उत्तर देने वाले हो। धर्मसंघ की व्यवस्था में भी प्रबन्धन कौशल हो। त्याग-संयम बढ़े ऐसा प्रयास हो। मुमुक्षुओं की संख्या बढ़ती रहे, शिष्य सम्पदा बढ़े।

हमारे धर्म में आचार्य के पास बहुत से अधिकार हैं। विनीत शिष्य -शिष्याएं मिलना भी आचार्य का सौभाग्य होता है। श्रावक - श्राविकाएं भी विनीत हैं, इंगित प्राप्त करते ही कार्य करने लग जाते हैं, समणीयां भी हैं। आचार्य को परम सहयोगी मिल जाये यह भी आचार्य का बड़ा भाग्य होता है, उपयुक्त उत्तराधिकारी प्राप्त हो जाता है। इन सबसे आचार्य सम्पदा सम्पन्न बन जाते हैं। आचार्य चित्त-समाधि में रहने वाले हो। आचार्य प्रवर की अभिवंदना में अनेकों चारित्रात्माओं ने अपनी-अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी वृंद एवं समणी वृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया।

जालना की बहन - बेटियों एवं महिला मंडल ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

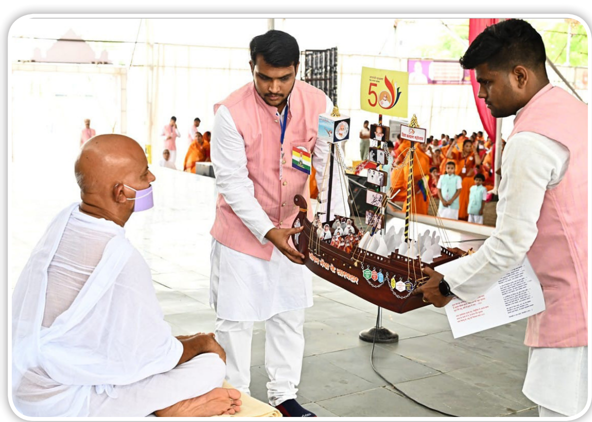

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**